Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 31 • 8 - 14 मई, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-05-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

अवमाणिते परेणं तु,
ण सिलोगं वयंति ते।

महान् वे होते हैं जो दूसरों के द्वारा अपमानित होने पर अपनी श्लाघा नहीं करते—अपने कुल-गौरव का परिचय नहीं देते।

पदाभिषेक समारोह में साधु-साध्वियों, समणियों व श्रावक समाज ने की आराध्य की अभिवंदना

हमारा धर्मसंघ धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति करता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि उदित कुमार जी एवं मुनि दिनेश कुमार जी को बहुश्रुत परिषद के सदस्य के रूप में किया मनोनीत

उधना, सूरत, ३० अप्रैल, २०२३

वैशाख शुक्ला दशमी-भगवान महावीर के केवलज्ञान कल्याणक दिवस के दिन ही सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर में तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी पट्टासीन हुए थे। पूरे धर्मसंघ की ओर से मुनि सुमेरमल जी 'सुदर्शन' ने आपश्री को अमल धवल चद्दर ओढ़ाई थी। आज यहाँ परम पावन का चौदहवाँ पदाभिषेक दिवस पूरा धर्मसंघ मना रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञजी के अनंतर पट्टधर, तेरापंथ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज वैशाख शुक्ला दशमी और परम वंदनीय श्रमण भगवान महावीर का कैवल्य कल्याणक दिवस है। केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्ति का दिन है। भगवान महावीर ने युवावस्था में श्रमण्य को स्वीकार कर लगभग साढ़े बारह वर्षों तक विशेष साधना-तप किया और आज के दिन उन्होंने अपना एक लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

यह दिन ज्ञान प्राप्ति दिवस जैसा है। आज का दिन तेरापंथ धर्मसंघ के साथ भी जुड़ गया। आचार्य भिक्षु ने एक ऐसा संगठन खड़ा कर दिया जो आगे विकास करता गया। आचार्य भिक्षु की उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली। पूज्य कालूगणी ने मुनि तुलसी को २२ वर्ष की युवा अवस्था में अपना दायित्व सौंप दिया। आचार्य तुलसी ने महाप्रज्ञ जी को अपना उत्तराधिकार सौंपा और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपना दायित्व मुझे सौंपने की कृपा की।

गुरुदेव तुलसी ने मुझे ज्ञान दिया और आगे विकास करने की प्रेरणा दी। महाश्रमण का पद प्रदान करवाया। संघीय प्रशासन के कार्यों में मुझे आगे बढ़ाया। भविष्य का इंगित दिया था। एक बार कहा था कि मैं ऊपर जा करके देखूँगा। मुझे युवाचार्य महाप्रज्ञ जी से भी जोड़ दिया। आचार्य महाप्रज्ञ जी का जब महाप्रयाण हो गया तो आज के दिन मुझे औपचारिक रूप में पट्टोत्सव के रूप में अमल चद्दर ओढ़ाकर दायित्व की रस्म अदा की गई।

हमारा धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है। वर्तमान आचार्य द्वारा ही भावी आचार्य का निर्णय होता है। मुनि सुमेरमल जी स्वामी ने मुझको शिक्षा-दीक्षा और संस्कार दिए थे। मुझ पर अनेक चारित्रात्माओं का उपकार रहा है। साध्वीप्रमुखाश्रीजी सहयोगी के रूप में होते हैं। वर्तमान में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का सहयोग प्राप्त हो रहा है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है।

संघ दायित्व की अमल चद्दर ओढ़े आज तेरह वर्ष पूरे हो रहे हैं। मैं इसकी लाज बनाए रखूँ ऐसी मेरी शक्ति बनी रहे। ये अमल धवल चद्दर निर्मल रहे, इसमें दाग न लग सके, इसके लिए मंगलकामना करता हूँ। इतना बड़ा धर्मसंघ मिला है। इस संघ के साथ गहराई से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है, यह भी भाग्य की बात है।

बहुश्रुत परिषद् का गठन भी मैंने किया था, उसमें सात सदस्य होते हैं, पर वर्तमान में इसके पाँच सदस्य ही हैं। मैं और दो मुनियों को बहुश्रुत परिषद् का सदस्य मनोनीत कर रहा हूँ—मुनि उदित कुमार जी स्वामी और मुनि दिनेश कुमार जी। बहुश्रुत परिषद् का भी एक दायित्व है। ज्ञान और स्वयं का विकास होता रहे।

हमारे आचार की भी अप्रमत्तता-जागरूकता बनी रहे। नई बात जोड़ सकते हैं, पुरानी बात छोड़ सकते हैं और पकड़े हुए भी रख सकते हैं। समीक्षा दृष्टि से कार्य होना चाहिए। आचार्य भिक्षु और उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा के प्रति श्रद्धाप्रणत हूँ। हमारे धर्मसंघ की परंपरा अविच्छिन्न रूप में लंबे काल तक चले।

पूज्यप्रवर ने अपने पट्टोत्सव पर सभी चारित्रात्माओं को तीन माह तक औषधि आदि के विगय की बख्शीष करवाई, तो आवस्सयं आगम के स्वाध्याय करने की प्रेरणा भी दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि परमपूज्य आचार्यप्रवर का आज पट्टोत्सव है। चारों ओर उत्साह का दृश्य दिखाई दे रहा है। आप हमें शिक्षा फरमाते हैं कि हमें गुप्ति का प्रयास करना चाहिए। विश्व पटल पर आप अनेक व्यक्तित्वों में शोभा रहे हैं। आपका कृतत्व ही आपके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आपके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया और दायित्व की चादर ओढ़ाते रहें। दायित्व की डोर एवं संघ का संचालन वही कर सकता है, जिसमें सेवा की भावना हो। आचार्यप्रवर हमेशा सेवा की भावना के प्रति जागरूक रहते हैं। संघ की बागडोर वह व्यक्ति संभाल सकता है, जो संघ की रीति-नीति, परंपराओं और मर्यादाओं को जानता हो। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आपके नेतृत्व करने की क्षमता के आधार पर ही आपके कोमल कंधों पर संघ का भार सौंपा था।

(शेष पृष्ठ २ पर)

नास्तिक नहीं, आस्तिक विचारधारा का अनुसरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना, १ मई, २०२३

मजदूर दिवस और गुजरात स्थापना दिवस पर अमृत की वर्षा से अध्यात्म के अंकुर को प्रस्फुटित करते हुए अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि दो विचारधाराएँ हैं—आस्तिक और नास्तिक विचारधारा। आस्तिक विचारधारा में आत्मा और शरीर को पृथक्-पृथक् माना जाता है। आत्मा स्थायी है, शरीर अस्थायी है। आत्मा अनंत जन्म ले चुकी है और आत्मा का हमेशा अस्तित्व रहेगा। जबकि शरीर विनाशधर्मा है।

पुनर्जन्म का सिद्धांत आत्मा और शरीर अलग-अलग हैं, इस सिद्धांत पर टिका हुआ है। अन्य जीव, अन्य शरीर यह आस्तिकवाद का सिद्धांत है। नास्तिक विचारधारा का सिद्धांत है—जो जीव है, वह शरीर ही है।

आस्तिकवाद के सिद्धांत पर अध्यात्मवाद टिका हुआ है। खाओ, पीओ, मौज करो, यह विचारधारा नास्तिकवाद पर टिकी हुई है। एक तरफ अध्यात्मवाद है, दूसरी तरफ भौतिकवाद है। राजा परदेशी भी नास्तिकवाद विचारधारा वाला व्यक्ति था। पर था जानकार-तार्किक व्यक्ति। परंतु राजा परदेशी का भाग्य था कि कुमार श्रमण केशी का योग मिल गया। मानो लोहे को पारस का स्पर्श मिल गया, सोना बन गया। कुमार श्रमण केशी के योग से राजा परदेशी नास्तिक से आस्तिक बना और श्रावक बन गया।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *जो अणुव्रतों को स्वीकार कर लेता है, उसके जीवन में कुछ संयम स्वतः आ जाता है। अणुव्रत व्रत की चेतना को पुष्ट करने वाला तत्त्व है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

महात्मा न बन सकें तो सदात्मा बनने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, वेसु-सूरत, २५ अप्रैल, २०२३

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मा के आठ प्रकार बताए गए हैं। दूसरे वर्गीकरण में आत्मा के चार प्रकार हैं –परमात्मा, महात्मा, सद्-आत्मा और दुरात्मा। सर्वकर्म मुक्त अवस्था, मोक्ष को प्राप्त हो चुकी द्रव्य, कषाय, योग, उपयोग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं वीर्य आत्मा परमात्मा है। वे सिद्ध मुक्त जीव हैं।

संसार में तीन प्रकार की आत्माएँ रहती हैं। संत-साधु लोग महात्मा यानि महान आत्माएँ हैं। जो गृहस्थ जीवन में धार्मिक, परोपकारी, ईमानदार, अहिंसा प्रेमी, संयम व नैतिकता का पालन करने वाले लोग सदात्मा होते हैं। हिंसा, लूटपाट आदि पापों में रचे-पचे रहकर दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं, वे दुरात्माएँ हैं।

शास्त्र में कहा है कि दुरात्मा अपना बहुत नुकसान कर लेती है। किसी की हत्या करने वाला तो एक जीवन का नाश कर सकता है, पर दुरात्मा तो भव-भव दुःख देने वाली, दुःख पाने वाली बन सकती है।

जब मृत्यु का समय निकट आता है, तब दुरात्मा के मन में पश्चाताप होता है कि अब मेरा क्या होगा। मैंने धर्म नहीं किया। मुझे तो नरक में जाना पड़ेगा। इसलिए हमें पहले से ही जागरूक रहना चाहिए। अगर महात्मा बन सको तो अति उत्तम। यदि महात्मा न बन सको तो सदात्मा जरूर बनो। यह प्रयास सबको करना चाहिए। जो सज्जन आदमी होता है, वो दूसरों के दोष देखने, दूसरों की निंदा करने की कोशिश नहीं करता। हम अपने दोष देखें। दूसरों में अच्छे गुण हैं तो उनके प्रति प्रमोद भाव रखें।

दूसरों को सुखी देखकर हमें दुखी और दूसरों को दुखी देखकर हमें सुखी नहीं होना चाहिए। कोई कष्ट में हों तो उनके प्रति अनुकंपा का भाव हो, आध्यात्मिक सहयोग करने का प्रयास हो। चित्त समाधि पहुँचाने का प्रयास करें।

सज्जन आदमी अपनी बड़ाई नहीं करता, नीति को कभी नहीं छोड़ता, औचित्य का अतिक्रमण नहीं करता, कोई अप्रिय बात भी कह दे, तो वह गुस्सा नहीं करता। धार्मिक साधना करते हुए गृहस्थ सज्जनता का जीवन जीए।

दो प्रकार के धर्म होते हैं–उपासनात्मक धर्म और आचरणात्मक धर्म। दोनों में एक का ही चुनाव करना हो तो आचरणात्मक धर्म को स्वीकार कर लेना चाहिए। अच्छे ईमानदारी-अहिंसा के भाव रहें। वैसे जप करना, सामायिक करना भी अच्छा रहे। भावों में शुद्धि रहे। अणुव्रत गृहस्थों के आचरण को अच्छा बनाने वाला आंदोलन है। प्रेक्षाध्यान भी भावों को शुद्ध बनाने का अच्छा माध्यम बन सकता है।

जिसके मन में अहिंसा प्रतिष्ठित हो जाती है। उसके घेरे में बैरी व्यक्ति भी आ जाए, तो उसका बैर-भाव दूर हो जाता है। हम सब सदात्मा-महात्मा रूप में रहें। क्षमा-संतोष आदि गुणों का हमारे में विकास होता रहे, तो आत्मा का कल्याण हो सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आत्मा को शुद्ध करने के लिए तप करना होता है। अपने भाव निर्मल होंगे तो आत्मा निर्मल बनेगी। पवित्रता का बड़ा महत्त्व होता है। स्वाध्याय, ध्यान एवं ब्रह्मचर्य एवं मंत्र अभ्यास से आत्मा शुद्ध और निर्मल बनाने का प्रयास करें। हम मन, वचन और काय के योग को शुद्ध रखें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि धर्म की कसौटी दो प्रकार की होती है–व्यावहारिक और आचारात्मक। जिसका व्यवहार नैतिक है, वह धार्मिक है। धर्म को ग्रंथों से अपने व्यवहार में लाएँ। व्यवहार के साथ आचार भी अच्छा हो। सम्यक् दृष्टिकोण से व्यक्ति के जीवन में धर्म प्रविष्ट हो सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी मंजुलयशा जी, साध्वी रुचिप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

तेरापंथ महिला मंडल एवं टीपीएफ द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। सभाध्यक्ष नरपत बोथरा, अमित सेठिया, टीपीएफ अध्यक्ष विजयकांत खटेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति की ओर से वर्षीतप करने वालों की सूची रूप में एक पुस्तक श्रीचरणों में उपहृत की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हमारा धर्मसंघ धार्मिक और आध्यात्मिक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि आज का दिन जैन शासन व तेरापंथ धर्मसंघ के लिए विशिष्ट गौरव का दिन है। आज ही के दिन भगवान महावीर को कैवल्य प्राप्त हुआ था तो आज ही के दिन आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्मसंघ में पट्टासीन हुए थे। गुरु वह होता है, जो नितांत गुरुता संपन्न होता है। आपश्री आचार्य के ३६ गुणों की गुरुता से संपन्न हैं। आपश्री के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है। हमें आपका नेतृत्व युगों-युगों तक प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना करता हूँ।

बहुश्रुत परिषद् के सदस्य मनोनीत होने पर मुनि उदित कुमार जी एवं मुनि दिनेश कुमार जी ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता के स्वर में अपनी भावना अभिव्यक्त की एवं स्वयं का और विकास होता रहे ऐसी गुरुवर से आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना की।

पट्टोत्सव के पावन दिन पर प्रातः सूर्योदय से पूर्व मुख्य मुनिश्री ने एवं साधुवृंद ने अपनी मंगलभावना रूपी बधाई गीत से अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में मुनिवृंदों ने संस्कृत के श्लोकों से वर्धापन किया। मुनि निकुंज कुमार जी, मुनि मार्दव कुमार जी, साध्वी वीरप्रभा जी, साध्वी लब्धिश्री जी, साध्वी रतिप्रभा जी, साध्वी ऋद्धिप्रभा जी, साध्वी समताप्रभा जी, साध्वी दीक्षाप्रभा जी, साध्वी पावनप्रभा जी आदि साध्वियाँ, साध्वी भव्ययशाजी, साध्वी नवीनप्रभा जी, साध्वी मृदुप्रभा जी, साध्वी जिज्ञासाप्रभा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वीवृंद ने समूह गीत प्रस्तुत किया। बर्हिविहारी साध्वियों ने भी गीत प्रस्तुत किया।

समणी सत्यप्रज्ञा जी, समणी रोहितप्रज्ञा जी एवं मुमुक्षु बहनों ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई। उधना समाज द्वारा धर्मचक्र का लोकार्पण हुआ। स्व० उपासक ओमप्रकाश जैन-कोटकपुरा की स्मृति में प्रकाशित पुस्तक 'ओम-संपदा' पूज्यप्रवर को उनके परिवार वालों ने उपहृत की।

संघगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में स्व० उपासक ओमप्रकाश जैन की पुत्री डॉ० शैली जैन, धर्मरुचिजी मुनिश्री की संसारपक्षीय पौत्री, आस्था एवं उधना उपासक श्रेणी ने भी अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की।

नास्तिक नहीं, आस्तिक विचारधारा का अनुसरण...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जैन दर्शन में आत्मा और शरीर को अलग-अलग माना गया है। प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति में कायोत्सर्ग के प्रयोग में भेद विज्ञान का प्रयोग कराया जाता है। भगवान महावीर ने इतनी तपस्या की तो उनका विशेष प्रयोजन रहा होगा तभी कैवल्य को प्राप्त हुए। जब आत्मा और शरीर अलग हों, तभी साधना का महत्त्व हो सकता है। साध्वीप्रमुखा गुलाबांजी ने तो जीवन के आठवें वर्ष में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। लंबा संयम पर्याय साध्वी बिदामाजी विद्यमान हैं। आस्तिकवाद है, तभी चारित्र ग्रहण किया जाता है, सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

आदमी जीवन में तथ्य को खोजे, यथार्थ पर विश्वास रखे। दुराग्रह न रखे। यह सम्यक्त्व को पुष्ट करने वाला तत्त्व है कि वही सत्य है, वह सत्य ही है, जो जिनेश्वर ने प्रवेदित किया है। कषाय की मंदता हो, यह सम्यक्त्व पोषक है। तत्त्व को अनाग्रह भाव से समझें। इन सबसे हमारा सम्यक्त्व पुष्ट रहेगा।

पूज्यप्रवर ने किशोर मंडल व कन्या मंडल के सदस्यों को धारणा अनुसार प्रत्याख्यान करवाए। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति दिन भर में अनेक क्रियाएँ करता है, उनमें सोचने की क्रिया सबसे अधिक होती है। जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक है–चिंतन करना। यह भी एक कला है। सफल और सार्थक जीवन सकारात्मक चिंतन की कला से जीया जा सकता है। नकारात्मक चिंतन आदमी को दुखी बना सकता है। आचार्यप्रवर का हमेशा सकारात्मक चिंतन होता है, तभी इतने लोग आकर्षित हो रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, तेयुप अध्यक्ष सुनील चिंडालिया, महिला मंडल अध्यक्षा जसुबाई, उधना ज्ञानशाला ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा अड़ाजन ज्ञानशाला ने गीत प्रस्तुत किया। लिंबायत ज्ञानशाला ने सम्यक्त्व और पांडेसरा ज्ञानशाला ने आचार्य भिक्षु पर सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने समूह गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ समाज ने समूह गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

साध्वी लब्धिश्री जी एवं समणी हर्षप्रज्ञा जी ने भी आचार्यश्री के श्रीचरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति

ज्योतिचरण...शत-शत वंदन

❐ साध्वी कृष्णाकुमारी ❐

अध्यात्म के सुमेरू, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का अभिनंदन अध्यात्म के सम्राट का अभिनंदन है। उनका अभिनंदन उनके अद्भुत विनय का, अनुत्तर संयम का, अप्रतिहत आनंद का एवं अनुपम निर्लिप्तता और निस्पृहता का अभिनंदन है।

(१) अद्भुत विनय–किसी भी पेड़ की सघनता, गहराई और मजबूती उसकी जड़ों पर निर्भर करती है। उसी प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व की ऊँचाई, गहराई का मापदंड उसकी विनम्रता से होता है। विनम्रता विकास के उच्च शिखर का स्पर्श कराती है। आचार्यप्रवर विनम्रता के शिखर पुरुष हैं।

आज तक इतिहास में ऐसा कोई प्रसंग सुनने में, देखने में या पढ़ने में नहीं आया कि एक आचार्य जो संघ के सर्वोच्च पद पर आसीन होते हुए अपनी शिष्या साध्वी को विधिवत् तीन बार प्रदक्षिण करे। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी शिष्या साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी (शासनमाता) को पट्ट से नीचे विराजकर वंदना की। नयनाभिराम यह दृश्य देख लाखों आँखें श्रद्धा से नम हो गईं, नत हो गईं।

आचार्यश्री की विनम्रता की पराकाष्ठा है, विनम्रता का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है–जो शताब्दियों के बीत जाने पर भी देश, समाज एवं भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा। अद्भुत विनम्रता का यह कालजयी अभिलेख युगों-युगों तक अमर रहेगा।

(२) अनुत्तर संयम–आपश्री के संयम पर्यव स्फटिक मणि के समान निर्मल एवं अत्यंत उज्ज्वल है। आपश्री का आहार संयम, इंद्रिय संयम एवं वाणी संयम अनुत्तर है।

आपश्री की अनासक्त चेतना इतनी जागृत है कि मनोनुकूल आहार उपलब्ध होने पर भी स्वेच्छापूर्वक उसका परिहार कर देते हैं। आप आहार को नहीं बल्कि श्रम को ही शरीर और मन की खुराक मानते हैं। नपे-तुले शब्दों में, निरवद्य भाषा का सूक्ष्म प्रयोग एवं आर्षवाणी से प्रयुक्त प्रवचन आपकी वीतराग चेतना को परिलक्षित करता है। सरस और सुबोध शैली में गहन तत्त्वों की प्रभावी प्रस्तुति आपश्री के प्रवचन कौशल की विशिष्टता है।

(३) अप्रतिहत आनंद–संहनन और धृति संपन्न व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में सुमेरू के समान अकंप रहते हैं। उनका धैर्य और मनोबल कदापि विचलित नहीं होता। वे निरंतर आनंदानुभूति का अनुभव करते हैं। आपश्री का दिव्य दर्शन उसी आनंदानुभूति से अणुप्राणित है। अनंत आनंद से ओत-प्रोत आचार्यश्री महाश्रमणजी की एक क्षण की पावन सन्निधि भी व्यक्ति के जीवन की अमूल्य धरोहर बन जाती है। अत्यधिक श्रम के बावजूद भी आपका मुखमंडल सदैव प्रसन्नचित्त रहता है। आपश्री के पवित्र आभामंडल में बैठने वाला सहज, शांति और आनंद का अनुभव करता है।

(४) अनुपम निर्लिप्तता–ब्रह्म बेला में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की सन्निधि में सतजुगी (खेतसीजी) का प्रसंग चल रहा था। खेतसीजी हमारे धर्मसंघ में वे संत हैं जिनका उत्तराधिकार की परंपरा में नाम आ चुका है। लेकिन वे आचार्य नहीं बने। नियुक्ति पत्र में दो नामों का (खेतसीजी और रायचंदजी) उल्लेख किया गया था। परंतु रायचंदजी को आचार्य बनाया गया।

इस प्रसंग में आचार्यश्री तुलसी ने कहा–आज भी सतजुगी जैसे संतों की जरूरत है। उस समय मुनि मुदितकुमार जी 'महाश्रमण' पद से अलंकृत थे। उनका मौन मुखर हुआ। उन्होंने गुरुदेव से विनम्र निवेदन किया–गुरुदेव! आज भी तेरापंथ धर्मसंघ में सतजुगी जिंदा हैं। आपने असीम अनुकंपा करके मुझे 'महाश्रमण' पद से अलंकृत किया। आप चाहे तो आज ही मुझे इस पद से निलंबित कर सकते हैं। प्रश्न होता है–ऐसा कौन व्यक्ति कह सकता है? वस्तुतः ऐसा वही व्यक्ति कह सकता है, जो पूर्णरूपेण आत्मस्थ है। जिसकी अंतर-चेतना परम पवित्र, निर्मल, जागृत और निर्लिप्त है। जिसे न मान-सम्मान की चाह है, न पद की अभिप्सा। जिसके रोम-रोम में अध्यात्म बसा है।

आचार्यप्रवर बहुधा फरमाते हैं–पद मिलना बड़ी बात नहीं, मान-सम्मान मिलना बड़ी बात नहीं, आत्मा की पवित्रता बढ़े यह बड़ी बात है।

प्रभो! अनुत्तर संयम, अद्भुत विनय, अप्रतिहत आनंद एवं अनुपम निर्लिप्तता जैसी विशिष्टतम विशेषताएँ आपश्री के सहज स्वभाविक नैसर्गिक गुण हैं। किसी-किसी के लिए तो प्रयत्न करने पर भी ऐसे गुणों को प्राप्त करना दुर्लभ है, किंतु आपश्री में ये गुण पारिणामिक भाव से समाए हुए हैं। आपश्री के ये गुण सहज अनुचर बने हुए हैं।

विभो! ये युग मेरे भीतर भी स्पर्श कर जाए। इन्हें मैं भी आत्मसात कर सकूँ और परम पूज्य गुरुदेव के इंगितानुसार संयम साधना करते हुए परम चित्त समाधिपूर्वक, आत्मकल्याण व आत्म विकास में प्रगति करती रहूँ ऐसा मुझे मंगल आशीर्वाद प्रदान करवाने की महती अनुकंपा कृपा दृष्टि कराएँ।

अभिनंदन उजले प्रभात का।
नूतन युग के सूत्रपात का।
पौरुष के मंगल प्रभात का।
नंदनवन के पारिजात है।।

दीक्षा कल्याणक महोत्सव पर

● साध्वी कुंथुश्री ●

भाग्य सराएँ गौरव गाएँ युग प्रधान गणिराज,
गुरु महाश्रमण मिले हैं, सुरभित सुमन खिले हैं,
सुरभित सुमन खिले हैं घी के दीप जले हैं।

दीक्षा कल्याणक महोत्सव हर्ष मनाएँ,
आस्था का अस्तित्व मंगल तिलक लगाएँ,
भावों से करते हैं अर्चन खुशियाँ वे अंदाज।।१।।

नेमानंदन को पाकर संघ खुशहाल है,
अनुत्तर संयम समता तेजस्वी भाल है,
दशों दिशाएँ तुम्हें बधाएँ करती हैं ओगाज।।२।।

जीवन निर्माता प्रभुवर भाग्यविधाता,
धन्य बन जाता जो भी चरणों में आता,
तेरी चरण शरण में आकर हर्षित सकल समाज।।३।।

तुमने बहाई जग में करुणा की धारा,
भटके मनुज को मिला सिंधु किनारा,
मानवता के महामसीहा है दुनिया को नाज।।४।।

वीतराग मोहक मुद्रा लगती मनहारी,
श्रुतधर शक्तिधर शांतिधर धारी,
युग-युग जीओ रहो निरामय शासन के सरताज।।५।।

लय : हमें यह पंथ मला है---

जय महाश्रमण की जय हो

● शासनश्री साध्वी संघमित्रा ●

जय महाश्रमण की जय हो।
प्रबल पुण्य के महापुंज की पल-पल मंगलमय हो।
जय महाश्रमण की जय हो।
श्रमनिष्ठा के शिखर पुरुष की पग-पग परम विजय हो।।

दीक्षा का कल्याण महोत्सव, वर्षारंभ शुभंकर।
गुर्जर-महाराष्ट्र धरती को, मिला विरलतम अवसर।
कलियुग में अमृत घन बरसे, बन सतयुगी समय हो।।

पंच दशक के प्रगति पंथ को कैसे मापे भगवन?
है अथाह, अकूत, अमाप्य, विकास पुरुष का जीवन।
जन गण मन गाये यश गाथा, भावाविल तन्मय हो।।

युग प्रधान, युग प्रहरी, युग चिंतन के परम प्रचेता।
युगाधार, युगवाही, युग की नस-नस के अध्येता।
इंद्रियजेता, आत्मविजेता शांत सुधा आलय हो।।

संघ समूचा, आनंदित प्रमुदित पा स्वर्णिम अवसर।
युग-युग तपो धरा पर भास्वर दिव्य दिवाकर गुरुवर।
सागर सम गंभीर-धीर, शीतलकर आभामय हो।।

✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर की दीक्षा गोल्डन जुबली पर हार्दिक कामना

● मुनि कमल कुमार ●

गुरु दीक्षा की गोल्डन जुबली, जन मन हर्ष अपार।
दिग्दिगंत में महाश्रमण की, हो रही जय-जयकार।
हो रही जय-जयकार, संघ का भाग्य सवाया।
तुलसी महाप्रज्ञ द्वारा, गण नायक पाया।
झूमर नेमा नंदन को है, वंदन बारंबार।
गुरु दीक्षा की गोल्डन जुबली जन मन हर्ष अपार।।

रहें निरामय कदम कदम जय हैं हार्दिक उद्गार।
स्थानक में उत्सव अवसर पर तीर्थ हुए हैं चार।
तीर्थ हुवे हैं चार झूम झूम गुरु गरिमा गाते।
सादर सविनय भक्तिपूर्वक शीश नमाते।
ऐसा आशीर्वाद हमें दें, करें स्व-पर उपकार।
रहें निरामय कदम-कदम जय हैं हार्दिक उद्गार।।

धीर वीर गंभीर सुगुरु पा होता सात्त्विक नाज।
युगों-युगों नेतृत्व मिले यह अंतर मन आवाज।
यह अंतर मन आवाज दे रहे आज बधाई।
चढ़ती बढ़ती रहे नित्य प्रतिपल पुण्याई।
कितने कीर्तिमान बनाए तेरापंथ के ताज।
कीर्तिमान पर कीर्तिमान सुन पुलकित सकल समाज।
धीर वीर गंभीर सुगुरु पा होता सात्त्विक नाज।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *वर्तमान को सुनियोजित ढंग से जीने के लिए हम भगवान महावीर की वाणी को हृदयंगम करें। जो भगवान महावीर की आराधना करता है, उसे अनंत शक्ति प्राप्त होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

तिरुपुर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण द्वारा किया गया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया। प्रेरणा सम्मान असिस्टेंट कलेक्टर पल्लवी वर्मा को प्रदान किया गया।

दूसरे चरण में 'उत्सव के रंग रिश्तों के संग कार्यशाला' का आयोजन किया गया। ननद-भाभी की ४ जोड़ियों ने इसमें भाग लिया। सभी जोड़ियों ने नाटक, कविता और अपने खट्टे-मीठे संस्मरणों द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। सभी जोड़ियों को रोचक गेम्स खिलाए गए। मंडल की बहनों द्वारा लघु नाटिका की प्रस्तुति भी दी गई।

कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्षा नीता सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी द्वारा किया गया।

द पॉवर ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला का आयोजन

उधना।

समणीवृंद के सान्निध्य में कार्यशाला आयोजित हुई। नमस्कार महामंत्र व मंडल की बहनों ने महाश्रमण अष्टकम् से कार्यशाला का शुभारंभ किया। अध्यक्षा जसु बाफना ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। समणी सौम्यप्रज्ञा जी ने कहा कि हमारे जीवन में रस होना चाहिए। महिला मंडल के गणवेश में अनुशासित लगती है।

जब अनुशासन हटता है तो हमें अपने जीवन में कई घटनाओं का सामना करना पड़ता है। अनुशासित रहकर हम नए सृजन कर सकते हैं। हमें हर क्षेत्र में शालीनता से पेश होना चाहिए। जहाँ मौन की अपेक्षा है वहाँ मौन रहना चाहिए। अनेक छोटे-छोटे उदाहरणों से समझाया। कार्यक्रम का संचालन रेखा चपलोत ने किया तथा आभार ज्ञापन अलका बनाकिया ने किया।

मौन की शक्ति विषयक कार्यशाला का आयोजन

सेलम।

अभातेममं के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेममं के द्वारा तेरापंथ सभा भवन में मौन की शक्ति कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। उषभ डूंगरवाल द्वारा स्वागत भाषण प्रेषित किया गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने वाणी संयम की शक्ति विषय पर कहा कि अभिव्यक्ति का सुंदर माध्यम है—भाषा। साधना का महत्त्वपूर्ण सूत्र है—वाणी। अनावश्यक बोलना, ग्रहण के समान है। साध्वी मेरुप्रभा जी द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी मयंकप्रभा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यशाला का संचालन साध्वी दक्षप्रभा जी द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सरिता चोपड़ा द्वारा किया गया। महिला मंडल, सभा, तेयुप, कन्या मंडल सभी की सराहनीय उपस्थिति रही।

उत्सव रिश्तों का - प्रेम ननद-भाभी का

मदुरै।

तेरापंथ भवन में तेममं एवं भारतीय जैन संघटना के संयुक्त तत्त्वावधान में उत्सव रिश्तों का - प्रेम ननद-भाभी का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुई। उपाध्यक्ष रेखा दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। अध्यक्षा नयना पारख ने अध्यक्षीय स्वर दिए। मंत्री दीपिका फूलफगर ने बेस्ट ननद-भाभी प्रतियोगिता का आयोजन करवाया। प्रतियोगिता में ३ राउंड्स थे, जिसमें प्रथम स्थान पर आस्था बोथरा एवं मीनल बागरा, दूसरे स्थान पर शिल्पा जैन एवं शिल्पा को मिला।

रिश्तों के बारे में नाट्य, संवाद आदि के द्वारा प्रतियोगियों ने अपने भाव व्यक्त किए। मधु पारख एवं सपना जैन ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही एवं सभी ने उत्साह से अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कार्यक्रम में सृष्टि बरड़िया, अरुणा बागड़ा का भी सहयोग रहा।

मंजिलें - रीच द अनरीचड कार्यशाला का आयोजन

पचपदरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में 'मंजिलें - रीच द अनरीचड' कार्यशाला का आयोजन साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में हुआ।

कार्यशाला के बारे में महेश बी० खतंग ने बताया कि कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल और कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी के उपदेशामृत का खरा मोती है महिला मंडल, जो महिलाएँ चारदीवारी में रहती थीं वह आज अपनी कल्पनाओं और योजनाओं के द्वारा नित्य नए कार्य कर कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता तेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि हमें मंजिल पाने के लिए गोल निर्धारित करने होंगे। कार्यशाला की विशिष्ट अतिथि सरपंच पूजा देवी राठौड़ ने कहा कि हम महिलाओं की जिम्मेवारी है कि कन्याओं की भ्रूण हत्याओं को रोकें।

कार्यशाला को साध्वी भावितयशा जी, साध्वी मौलिकयशा जी, साध्वी कुसुमलताजी, अभातेममं की राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा, कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरेला ने संबोधित किया। कार्यशाला में अनेक पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका रूपेंदु ढेलड़िया ने किया।

उत्सव के रंग रिश्तों के संग कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, गुवाहाटी द्वारा उत्सव के रंग रिश्तों के संग ननद-भाभी की जोड़ी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। सुनीता गुजरानी ने ननद-भाभी पर गीत प्रस्तुत किया। अध्यक्ष मंजु भंसाली ने अपने वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। इस कार्यक्रम का संचालन विद्या कुंडलिया ने किया।

कार्यक्रम में ननद-भाभी की ८ जोड़ियों ने भाग लिया। सभी जोड़ियों ने अपने-अपने अनुभव शेयर किए तथा उन्हें कई आकर्षक व ज्ञानवर्धक खेल खिलाए गए। इन जोड़ियों में प्रथम स्थान पर नेहा दुगड़ व रंजना भंसाली, द्वितीय स्थान पर संध्या कोठारी व सुनीता भूतोड़िया, तृतीय स्थान पर कनक डूंगरवाल व पूजा मरोठी रही। अन्य सभी भाग लेने वाले जोड़ियों में सुनीता गुजरानी व एकता बोथरा, ममता दुगड़ व समता कुहाड़, खुशबू चोपड़ा व मधु शर्मा, मीनू दुधोड़िया व रितु दुगड़, सुजाता बोथरा व नेहा डागा को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम की संयोजिका विद्या कुंडली एवं स्वाति धारीवाल थी। बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

वृहद दंपति कार्यशाला का आयोजन

फरीदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में जैन स्थानक में 'वृहद दंपति कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जिसमें जैन व जैनेत्तर समाज के सैकड़ों भाई-बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। 'हैप्पी कपल - खुशियाँ डबल' कार्यक्रम में सबकी खुशियों को शतगुणित कर दिया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि परिवार रूपी इमारत के दो मजबूत पीलर हैं पति और पत्नी जिनके सक्षम कंधों पर परिवार रूपी भव्य महल खड़ा हुआ है। परिवार रूपी रथ के दो कुशल सारथी हैं पति व पत्नी, जो परिवार की गाड़ी को सम्यग् ढंग से संचालित कर रहे हैं। परिवार की खुशहाली तभी कायम रह सकती है जब पति-पत्नी दोनों खुश हों। पति-पत्नी के संबंधों में जितनी मधुरता, समरसता व प्रेम का निर्झर बहेगा उतना ही परिवार खुश व आनंदित रहेगा।

हैप्पी कपल के टिप्स देते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि दोनों के बीच अंडरस्टेंडिंग अच्छी होनी चाहिए। परिवार के बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान के भाव रहने चाहिए। छोटों के प्रति वात्सल्य के भाव रहने चाहिए। टोलरेंस पावर पति-पत्नी के संबंधों में खुशहाली ला सकता है।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने 'फाइव सी' की चर्चा करते हुए कहा कि डोंट क्रिटिसाइज ईच अदर, डोंट कंपेयर विथ अदर्स, बी केयरफूल फॉर पार्टनर, कोंप्रोमाइस एंड कम्युनिकेशन। ये पाँच सी पति-पत्नी के संबंधों में मधुरता एवं प्रसन्नता दे सकते हैं।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच का संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का मधुर संगान किया।

सभाध्यक्ष गुलाबचंद बैद, जैन स्थानक के मंत्री अंकित जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। रायचंद राखेचा ने अपनी बहनों के स्वागत में अनेकों संकल्प स्वीकार कर संबंधों की भेंट चढ़ाई एवं अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति दी। सेक्टर-७ की बहनों ने मंगल संगान किया।

ननद-भाभी कार्यशाला का आयोजन

उत्तर-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा तालमेल कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें अच्छी संख्या में बहनों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार के रिश्ते होते हैं। उसमें ननद-भाभी का रिश्ता एक अद्भुत, विलक्षण विशिष्ट होता है। रिश्तों में कभी खटास नहीं आनी चाहिए। ननद भाभी का और भाभी ननद का मान रखे, सम्मान दे।

मुनिश्री ने कहा कि प्रदर्शन आडंबर से रिश्तों में खटास भी आ सकती है। रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए सहनशीलता, विनम्रता, मधुर व्यवहार प्रेम, सौहार्द की आवश्यकता रहती है। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन में सामंजस्य का होना अत्यंत आवश्यक है। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर स्वागत भाषण अध्यक्ष संगीता लुणिया, सुनीता डोसी, पुष्पा हीरावत, ममता चंडालिया, वीणा बैद, ममता मणोत, श्वेता चोरड़िया ने अपनी प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन मंत्री सपना बिरमेचा ने किया।

नवकार करे भव पार

तिरुकलीकुंड्रम।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में रोचक एवं अध्यात्म से ओतप्रोत 'नवकार करे भव पार' का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में १० साल के बालक से लेकर ८० वर्ष के अनुभवी श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। साध्वी लावण्यश्री जी की विशेष प्रेरणा से इस प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने रोचक तरीके से करवाया।

इस प्रतियोगिता में विजेता रहे प्रशांत दुगड़, विशाल वरोला एवं जियांश खाटेड़। द्वितीय स्थान सुशीला दुगड़, किरण दुगड़, पवन दरला, प्रमिला खाटेड़, रेखा बोहरा। सभी में बहुत अच्छा उत्साह रहा। स्थानकवासी, मूर्तिपूजक आदि भाई-बहन भी उत्साह के साथ अनुष्ठान में सम्मिलित हुए।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति

गुणों के आकार आचार्यश्री महाश्रमण

❐ साध्वी अमृतप्रभा ❐

जीवन के ग्यारहवें बसंत में एक नन्हे किशोर के जिज्ञासु मानस में अध्यात्म के रहस्य को जानने की उत्कंठा जागृत हुई। मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी के सान्निध्य एवं प्रवचन पाथेय से उसे पोषण मिला। प्रेरणा पीयूष पाकर हृदय वैराग्य से ओत-प्रोत हो गया। परिजनों के समक्ष हृदय की भावना को प्रस्तुत किया। बड़े भ्राता सुजानमलजी ने परीक्षण की कसौटी पर कसा। माता नेमां देवी की अनुज्ञा पाकर जीवन के बारहवें बसंत में संयमश्री का वरण किया। शक्तिशाली गुरु के चरणों में जीवन डोर को समर्पित करके निश्चिंतता का अनुभव किया। अनुशासन संवलित गुरुदेवश्री तुलसी के स्नेहिल संरक्षण में बालमुनि मुदित कुमार की संयम यात्रा का शुभारंभ हुआ।

गुरु की पारखी नजरों ने बाल के भाल पर अंकित भविष्य के आलेख को पड़ा। मन प्रसन्नता से भर गया। विधाता की सुदूरदर्शी निगाहें प्रतिभा के निर्माण पर केंद्रित हो गई। धीरे-धीरे विनय, समर्पण और अनुशासन के सोपान पर आरूढ़ हो वही प्रतिमा अपने आराध्य के हृदय में आसन जमाकर अवस्थित हो गई।

एक ओर आध्यात्मिक अनुशासन तो दूसरी ओर हार्दिक समर्पण। एक ओर कुशल गति संचालक मार्गद्रष्टा तो दूसरी ओर श्रम निष्ठा व स्थितप्रज्ञता। उर्वरा धरती पर विकास की पौध लहलहाने लगी। प्रज्ञा की पारदर्शिता बिखरने लगी। सफलता साक्षात्कार के लिए लालायित हो उठी। सपनों के अनुरूप उभरती तस्वीर को देख सृष्टा का मन संतुष्टि से भर गया। कलाकार के सुदक्ष हाथों ने सुनहरे रंगों से उसे सुसज्जित कर अपने उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ को महनीय कृति सौंप निश्चिंत बना दिया।

अटूट श्रमनिष्ठा, आचारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा एवं दायित्वनिष्ठा देखकर योगक्षेम वर्ष में आचार्य तुलसी ने आपको 'महाश्रमण पद' पर नियुक्त कर चतुर्विध धर्मसंघ में प्रतिष्ठित किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अर्हताओं का संप्रेषण प्रारंभ कर दिया। १४ सितंबर, १९९७ में भाद्रव शुक्ला द्वादशी को गंगाशहर में हजारों की उपस्थिति में युवाचार्य पद पर नियुक्त किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रत्येक कार्य में आप सहयोगी रहे। चाहे वह कार्य अंतरंग विचार-विमर्श का हो या साधु-साध्वियों की सारणा-वारणा का हो। समण श्रेणी की सार-संभाल का हो या श्रावक समाज के मार्गदर्शन का हो। प्रवचन का हो या गोचरी-दर्शन का हो। कार्य छोटा हो या बड़ा हर कार्य में सदा आपने समर्पित भाव व निष्ठा से अपनी शक्ति और श्रम का सदा उपयोग किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कई बार फरमाया—वह आचार्य सौभाग्यशाली होता है जिसे योग्य उत्तराधिकारी मिले। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मुझे योग्य उत्तराधिकारी मिला है। जनता या समाज को इस बात की प्रसन्नता है कि उन्हें अच्छा भविष्य मिला है। योग्य युवाचार्य मिले हैं। महाश्रमण ने मुझे पूर्ण निश्चिंत बना दिया है। बहुत हल्का बना दिया।

आचार्य महाश्रमणजी का जीवन पुरुषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व का जीवंत दर्शन है। बालक मोहन से मुदित, मुनि मुदित से महाश्रमण, महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण एवं आचार्य महाश्रमण तक की यात्रा श्रमनिष्ठा की बेजोड़ मिसाल है।

किसी कवि ने कहा है—

धुन के पक्के कर्मठ मानव,
जिस पथ पर बढ़ जाते हैं।
एक बार तो रौरव को भी,
स्वर्ग बना दिखलाते हैं।।

श्रमनिष्ठा के साथ आपका जीवन सरलता की बेजोड़ नज़ीर है। आचार्य पद पर सत्तासीन होने के बावजूद भी आपका हृदय बच्चे की तरह सहज सरलता के पवित्र रस से आप्लावित है। छल, प्रपंच एवं कृत्रिमता के मुखौटे से अनावृत्त आपकी चेतना साम्यभाव में अवस्थित है बनावटीपन आपको कतई पसंद नहीं है। 'मृदुनी कुसुमाऽपि' यह उक्ति आपके जीवन में स्पष्ट चरितार्थ है। नैसर्गिकता के साथ कोमलता आपको विरासत में मिली है।

आचार्य महाश्रमण प्रबल पुण्योदय के धारक हैं। जिन्हें दो-दो युगप्रधान आचार्यों की संघ संपदा, शिष्य संपदा, अनुभव संपदा एवं अनुशासन के विशिष्ट गुरु विरासत में मिले हैं। ऐसा विनीत समर्पित चतुर्विध धर्मसंघ मिला है। तेरापंथ धर्मसंघ धन्य है। जिसे ऐसे तेजस्वी, यशस्वी, ओजस्वी एवं तपस्वी अनुशास्ता की अनुशासना मिली है। जिनके आभावलय की शीतल छाया में धर्मसंघ गति से प्रगति शिखर पर आरोहण कर रहा है।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी जया देवी-पारस सेठिया के सुपुत्र एवं पुत्रवधू निखिल-सीमा सेठिया की नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन छाजेड़, विपिन बोथरा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

जैन संस्कारक विपिन बोथरा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। इस अवसर पर पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

पर्वत पाटिया।

भीनासर निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी सरोजदेवी पुखराज कोचर के सुपुत्र अशोक कोचर के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन बुच्चा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक करवाया।

अशोक कोचर ने पधारे हुए संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया। परिषद की ओर से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण से शुरुआत की गई।

साध्वी सत्यप्रभा जी ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा शिखर महापुरुष थे। साध्वीश्री जी ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने पहला श्वास भव्य प्रसाद के नहीं, रेतीली भूमि पर खुले आकाश में जन्म लिया। जिसने कभी स्कूल का दरवाजा तक नहीं देखा। आचार्य कालूगणी की छत्र-छाँव में गुरुदेव तुलसी ने आपश्री की प्रज्ञा जागृत की, तभी आप मुनि नथमल से महाप्रज्ञ और महाप्रज्ञ से आचार्य महाप्रज्ञ बने।

आचार्य तुलसी के सान्निध्य में रहकर आपश्री ने दर्शन, न्याय, व्याकरण, कोष, मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिस पर प्रज्ञा पुरुष की पकड़ न हो।

साध्वी ध्यानप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ प्रेक्षाध्यान के रूप में एक विशिष्ट वैज्ञानिक साधना पद्धति के द्वारा सैकड़ों व्यक्तियों के मानसिक विकृति को दूर हटाकर आध्यात्मिक ऊर्जा एवं शांति प्राप्त हो वैसा अवदान दिया। उनकी बहुत सी पुस्तकें और लेख उनके पूर्व नाम मुनि नथमल से प्रकाशित हुई।

साध्वी श्रुतप्रभा जी ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ एक संत, योगी, आध्यात्मिक, दार्शनिक, अधिनायक, लेखक, वक्ता, कवि, साहित्यकार थे। आपके विभिन्न विषयों पर लगभग १५० ग्रंथ लिखे।

मुमुक्षा प्रियंका बाई ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ एक योगीपुरुष थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने छोटे-छोटे ध्यान व पुस्तकों के माध्यम से जीवन जीने की राह बताई।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, वरिष्ठ श्रावक चंपालाल बालड़, महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष अयोध्यादेवी ओस्तवाल, कमलादेवी ओस्तवाल, महिला मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया व विभिन्न ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा आचार्य महाप्रज्ञजी के बारे में भाषण, गीतिका, महाप्रज्ञ अष्टकम् प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी यशस्वीप्रभा जी द्वारा किया गया।

तप अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन

हासन।

तेमम, हासन के सदस्य प्रेमलता गुलगुलिया(६०) का दूसरा चोवियार वर्षीतप के उपलक्ष्य में चनाकेशवा देवस्थान में अनुमोदना कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों के सदस्य आए और तपस्वी की अनुमोदना की।

हासन डिस्ट्रिक ज्वेलर्स के सेक्रेटरी प्रमोद, हासन सभा के उपाध्यक्ष महावीर भंसाली, पूर्व अध्यक्ष जयंतीलाल कोठारी, चांदमल सुराणा, मंत्री सुरेश कोठारी, महिला मंडल के अध्यक्ष संगीत कोठारी, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष वसंत वोरा, स्थानकवासी युवा संघ के अध्यक्ष राजू मिनी, समाज के सभी धर्म बंधुओं ने वर्षीतप तपस्या की अनुमोदना की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *विज्ञान अपने आपमें महत्त्वपूर्ण विषय है। विज्ञान का लक्ष्य है सत्य की खोज करना, उसे उद्घाटित करना।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

❐ **प्रो. धर्मचंद जैन, भीलवाड़ा** ❐

आचार्यश्री महाश्रमण, तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता या आचार्य हैं। उन्हें युवा मनीषी, महातपस्वी, शांतिदूत व उदारता के पर्याय एवं कीर्तिमान महपुरुष के नाम से जाना जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में भी विख्यात हैं। आचार्य महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण से भी विभूषित किया गया है। युगप्रधान व्यक्ति वही हो सकता है, जो सद्गुणों से युक्त हो, ज्ञानवान हो, करिश्माई और आदर्श नेतृत्व वाला हो, जिसके अनुयायियों में उसके प्रति श्रद्धा की भावना हो, ऐसे व्यक्तित्व की कथनी व करनी में अंतर नहीं हो और जिसने जन-जीवन का निकट से साक्षात्कार करके उसे दुर्व्यसनों से दूर रहने का एक भगीरथ आंदोलन चलाकर उसमें सफलता प्राप्त की हो। युगप्रधान वही व्यक्ति हो सकता है, जिसमें धर्म, विज्ञान, अध्यात्म और राष्ट्रवाद का अपूर्व समन्वय हो, ऐसा व्यक्तित्व अपने कर्तृत्व से अहिंसक समाज संरचना का सूत्रधार हो। वर्तमान आचार्य महाश्रमण में उपर्युक्त सभी गुणों का समावेश हुआ है। अतः उन्हें युगप्रधान अलंकरण से विभूषित करना सर्वथा उपर्युक्त सामायिक एवं प्रासंगिक है।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण अनेक अनूठी, विशेषताओं को संजोए हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के पहले आचार्य हैं, जिनकी दीक्षा किसी आचार्य द्वारा नहीं हुई। आपका दीक्षा लेने से पूर्व का नाम मोहन था। आपकी जन्म भूमि सरदारशहर में मुनिश्री सुमेरमल जी 'लाडनूं' द्वारा दीक्षा हुई। बाद में मोहन को मुनि मुदित के रूप में जाना जाने लगा। आचार्य तुलसी इनकी प्रतिभा के कायल थे और उन्होंने संत मुदित को महाश्रमण अलंकरण प्रदान किया, बाद में आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें युवाचार्य पद प्रदान करते हुए युवाचार्य महाश्रमण का ही संबोधन प्रदान किया।

सरदारशहर में ही आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन के बाद युवाचार्य महाश्रमण स्वतः स्वभाविक रूप से तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गए। इस तरह से आचार्य महाश्रमण को आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपम कृति होने का भी गौरव प्राप्त होने के साथ-साथ इन दोनों आचार्यों की गौरवशाली विरासत भी प्राप्त हुई। आचार्य महाश्रमण बनने से पूर्व अपनी अटूट श्रद्धा व समर्पण से विभिन्न स्थितियों का सफर तय करके इस प्रतिष्ठित पद को प्राप्त किया है। मोहन से मुदित, मुदित से महाश्रमण, महाश्रमण से युवाचार्य। महाश्रमण और युवाचार्य महाश्रमण से आचार्य महाश्रमण बनने तक की यह यात्रा केवल तेरापंथ धर्मसंघ की ही नहीं अपितु जैन धर्म का एक गौरवशाली अध्याय है।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण आगमों, जैन दर्शन और तुलनात्मक धर्म के निष्णात और आधिकारिक विद्वान हैं। आपके नेतृत्व में वर्तमान में भी आगम संपादन का कार्यक्रम अनवरत चल रहा है। अपने दो महान गुरुओं—आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के ग्रंथों का पारायण करके इनके वाङ्मय का भी संपादन कराया है।

जैन विश्व भारती मान्य संस्थान लाडनूं अर्थात् मान्य विश्वविद्यालय विश्व का पहला जैन विश्वविद्यालय है। यह संस्थान जैन विद्या तुलनात्मक धर्मों, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अहिंसा प्रशिक्षण का विश्वव्यापी केंद्र बन गया है। आचार्य महाश्रमण इस विश्वविद्यालय के 'अनुशास्ता' के रूप में सर्वोच्च अधिकारी है। आपके नेतृत्व एवं निर्देशन में यह विश्वविद्यालय प्रगति के नए सोपान तय कर रहा है।

आचार्य महाश्रमण अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं। आप प्राकृत, संस्कृत, हिंदी पर अच्छा अधिकार रखते हैं। साथ ही आप तेरापंथ के पहले ऐसे आचार्य हैं, जिनका अंग्रेजी पर भी अच्छा अधिकार है। आचार्य महाश्रमण कुशल प्रवचनकार हैं। आप अपने प्रवचनों में आगम वाणी, भिक्षु दर्शन, तेरापंथ दर्शन और पूर्ववर्ती आचार्यों के विचार दर्शन के साथ-साथ सामायिक विषयों पर भी व्याख्यान देते हैं। आपका कंठ भी मधुर है और व्याख्यान के बीच गीतिकाएँ गाकर जन-साधारण को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। आप ऐसे जैन आचार्य हैं, जिन्होंने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का लाडनूं में अमृत महोत्सव मनाया। बाद में बीदासर में पुनः 'शासनमाता' के अलंकरण से अलंकृत करके उन्हें असाधारण सम्मान प्रदान किया। जब वे दिल्ली में अस्वस्थ हुए तो एक दिन में ४७ किलोमीटर की पदयात्रा करके उन्हें दर्शन दिए, इसके बाद साध्वीप्रमुखा ने संथारा करके अपनी जीवन लीला को समाप्त किया। आप नारी सशक्तिकरण के पर्याय हैं। आपने दिल्ली में ऐतिहासिक लालकिले से अपनी अहिंसा यात्रा प्रारंभ की, जो २३ राज्यों से गुजरती हुई, जनसाधारण को नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति का संदेश और संकल्प प्रदान करती हुई लोक-कल्याण की प्रेरक बनी। आचार्य महाश्रमण ने असम, मेघालय और नागालैंड जैसे उत्तरी-पूर्वी राज्यों की यात्रा करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस यात्रा का आपने दिल्ली में ही समापन किया। आप पहले जैन आचार्य हैं, जिन्होंने नेपाल के शहर विराटनगर में चातुर्मास किया। आपने भूटान जैसे राष्ट्र की भी पदयात्रा करके सबको चमत्कृत कर दिया। अपनी इस अहिंसा यात्रा में आपने विदेशी राष्ट्राध्यक्षों, उनके प्रतिनिधियों के साथ-साथ देश के मूर्धन्य राजनेताओं को भी आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्रदान किया।

आप आधुनिक तकनीक को भी धर्म के प्रचार के लिए आवश्यक मानते हैं। आपकी प्रेरणा से ही ८ मई, २०२२ को सरदारशहर में आचार्य महाप्रज्ञ की समाधि स्थल पर अत्याधुनिक तकनीकी से लैस आचार्य महाप्रज्ञ म्यूजियम का लोकार्पण हुआ।

ऐसे अटल संकल्प शक्ति के धनी, अद्भुत संगठनकर्ता और अनुशासन के जीवन पर्याय, युगप्रधान आचार्य महाश्रमण को शत्-शत् वंदन है।

ज्ञानशाला द्वारा अध्यात्म विकास सीरीज व जप अनुष्ठान

गंगाशहर।

मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला आयोजित हुई। सहप्रभारी चैतन्य रांका ने बताया कि गुरुदेवश्री तुलसी की मासिक पुण्यतिथि पर तेरापंथ भवन में जप का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला, गंगाशहर ने जप के माध्यम से अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। जिसमें ज्ञानशाला के २०० से अधिक ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाओं ने मिलकर जप किया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजक एवं सभा मंत्री रतनलाल छलाणी, ज्ञानशाला प्रभारी सी०ए० मोहित संचेती, ज्ञानशाला संयोजिका संजू लालाणी, मोहिनी चोपड़ा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी व्यवस्थाओं में किशोर मंडल से रौनक भंसाली उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला, गंगाशहर में 'मैंने भी सुना' विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत बच्चों को एक टास्क दिया गया कि वो गुरुदेव का प्रवचन सुनें। जिसका मूल विषय था 'मूल नहीं भूल को छोड़ें' बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। पूछे गए प्रश्नों का बच्चों ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्म तेरापंथ की नई संभावनाओं का जन्म

अणुविभा, जयपुर।

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी व शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी आदि ११ साध्वियों के सान्निध्य में ११वें आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव आध्यात्मिक उल्लास व उमंग के साथ तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में मनाया गया। सौरभ जैन द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के संगान से कार्यक्रम शुरू हुआ।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने दुगड़ कुल अवतंस बालक मोहन के जन्म को तेरापंथ की नई संभावनाओं का जन्म एवं जिनशासन के उज्ज्वल भविष्य का संकेत बताते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण प्रारंभ से ही उदितोदित व्यक्तित्व संपन्न थे। विवेकसंपन्न, बुद्धिमान और विनयशील बालक मोहन के भीतर छिपी योग्यता को मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने परखा। उसे निखारने का प्रयास किया और वही बालक मुनि मुदित, महाश्रमण मुदित तथा आचार्य महाश्रमण के रूप में अपने कर्तृत्व से सबको मुग्ध कर रहा है।

शासनश्री साध्वी मधुरेखाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जैसे महापुरुषों का अवतरण होना धरती का सौभाग्य है। आचार्यप्रवर अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व व नेतृत्व से धर्मसंघ को अमूल्य अवदान प्रदान कर रहे हैं। जिनशासन की महिमा शिखरों पर चढ़ा रहे हैं।

साध्वी मधुलता जी ने गुरुदेव के जन्म और शैशव के रोचक संस्मरण प्रस्तुत कर परिषद् को भावविभोर कर दिया। साध्वीवृंद द्वारा समवेत स्वर में प्रस्तुत अभ्यर्थना गीत काफी सरस व प्रभावपूर्ण रहा। साध्वी लोकोत्तरप्रभा जी व साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने कविता व वक्तव्य के द्वारा आस्थासिक्त भाव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन सुरेश बरड़िया ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पट्टोत्सव समारोह

नाथद्वारा।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस, १४वाँ पट्टोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण ऊर्जा के महाकोष हैं। महासृजन के महानायक हैं। जिनके तेज प्रताप ने देश-विदेश में व्यापक पहचान बनाई है। सदियाँ सहस्राब्दियाँ वीतराग कल्प को पाकर निहाल हो गई। अखिल विश्व जिनसे आभामंडित है। जैन, अजैन प्रबुद्ध आमजन जिनकी अहिंसा यात्रा से लाभान्वित हुआ। पूज्यपाद का Peace Mind पूरी दुनिया को Peace Power देता रहे। Powerful mind जिनशासन तेरापंथ शासन को Powerful बनाता रहे। Positive mind मानव जाति को positive attitude का आलोक देता रहे। आपकी चरण शरण में हम अंतर यात्रा करें। महामहिम चिरायु हो शतायु हो।

साध्वीवृंद ने साध्वी डॉ० परमयशाजी द्वारा रचित गीत का संगान किया। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने आगम सूक्तों पर आधारित स्वरचित कविता के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने संघ शिरोमणि की अनुत्तर विशेषताओं का वर्णन किया। कार्यक्रम में कमलेश धाकड़, सुमन कोठारी, शांति देवी ने अपने आराध्य के प्रति भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत 'महाश्रमण अष्टकम्' के द्वारा हुई। कार्यक्रम संचालन साध्वी विनम्रयशा जी ने किया।

नि:शुल्क किडनी प्रोफाइल टेस्ट

बैंगलोर।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन युवा संगठन बैंगलोर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर एवं आडुगुडी के संयुक्त तत्त्वावधान में नि:शुल्क किडनी प्रोफाइल टेस्ट के अंतर्गत ब्लड शुगर, ब्लड यूरिया, सीरम क्रिएटिनिन, सीरम कैल्शियम एवं यूरिक एसिड टेस्ट का आयोजन कुंडलपुर नगरी, फ्रीडम पार्क में किया गया।

शिविर में परिषद अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष विनय बैद, मंत्री विकास बाबेल, सहमंत्री विनोद कोठारी एवं रमेश सालेचा, कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा की विशेष उपस्थिति रही। अभातेयुप से राकेश दक ने शिविर स्टॉल का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में एटीडीसी प्रभारी सुरेश संचेती, पूर्व प्रभारी रजत बैद, पूर्व संयोजक प्रवीण नाहर, सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। राजाजीनगर विधायक सुरेश कुमार ने कैंप का अवलोकन किया और कार्यकर्ताओं के श्रम की प्रशंसा की। डॉक्टर कोमल, स्टाफ कस्तूरी, निशिता, धनलक्ष्मी एवं उषा के विशेष श्रम से कुल २४५ लाभार्थियों की जाँच की गई। मंत्री विकास बाबेल ने आभार ज्ञापन किया।

✦ *जैसे फूलों की सुगंध को फैलाने का काम हवा करती है, ठीक उसी प्रकार महापुरुषों और अध्यात्म की सौरभ को साहित्यकार और पत्रकार विकीर्ण कर सकते हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर उद्गार

अनुत्तर निर्जरार्थी आचार्य महाश्रमण

● **समणी जिज्ञासाप्रज्ञा** ●

आगम साहित्य में मुनि के लिए एक विशेषण का प्रयोग मिलता है- निज्जरट्ठिए। मुनि का खाना, पीना, सोना बोलना, चलना, पढ़ना, उपदेश देना आदि सब क्रियाएं निर्जरा के साथ जुड़ी हुई हैं। आचार्य महाश्रमणजी की जीवन-चर्या निर्जरा की परिक्रमा करती रहती है, फिर वह लोगों को सैकड़ों बार मंगलपाठ सुनाना हो या किसी शोक संतप्त परिवार को प्रतिबोध देना हो, चाहे रुग्ण साधु-साध्वियों की तत्काल सेवा की व्यवस्था करना हो या उग्र विहार करना हो। आचार्यश्री की श्रमनिष्ठा और निर्जरा की भावना देखकर आचार्य महाप्रज्ञजी अनेक बार फरमाते थे- 'महाश्रमण तपस्वी है, परिश्रमी है, अतः बहुत निर्जरा कर रहा है।'

भगवान महावीर ने निर्जरा के बारह भेदों का उल्लेख किया है, उनमें छह बाह्य तथा छह आंतरिक हैं। खाद्य-संयम, ऊणोदरी तप, चीनी मात्र का परित्याग और प्रतिदिन आसन-प्राणायाम- ये सारे उपक्रम बाह्य तप को लेकर करने वाले हैं। बाह्य तप में आचार्य महाश्रमणजी की प्रतिसंलीनता और त्रिगुप्ति की साधना उत्कृष्ट है। मन से असत् के चिंतन का निषेध, उत्कृष्ट वाक् संयम तथा घंटों तक एक आसन में स्थिर मुद्रा में बैठना- सबके मन को आकृष्ट करने एवं श्रद्धा उत्पन्न करने वाले हैं। मरण विभक्ति प्रकीर्णक में उल्लेख है कि त्रिगुप्त मुनि के विपुल निर्जरा होती है। यह बात आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में पूर्णतया चरितार्थ होती है।

छहों आभ्यंतर तप की साधना आचार्य महाश्रमणजी के जीवन में देखी जा सकती है। इनमें भी विनय और वैयावृत्त्य की अप्रतिमसाधना धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य को अभिनव प्रेरणा देने वाली है। आचार्य महाप्रज्ञजी अनेक बार साधु-साध्वियों के समक्ष युवाचार्यश्री के विनय और गुरु के प्रति सहज समर्पण को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते थे। सैकड़ों ऐसे प्रसंग हैं, जब कष्ट झेलकर भी उन्होंने गुरु के वचनों को साकार किया।

आचार्य महाश्रमणजी का साधु-साध्वियों एवं समणियों के प्रति जो करुणा का भाव है, वह स्तुत्य है। विशाल धर्मसंघ में किसी भी सदस्य को जब भी शारीरिक सेवा की आवश्यकता हुई, आचार्यश्री अपने आहार और विश्राम को गौण करके भी तत्काल उनकी समुचित व्यवस्था कर देते हैं।

सर्दी गर्मी सहन करना, लोगों की भावना को साकार करना, हर समय जनता के लिए उपलब्ध रहना, धैर्य से सबकी बात सुनना, उग्र विहार करना आदि ऐसे उपक्रम हैं, जिनसे आचार्यश्री प्रतिक्षण अप्रतिम निर्जरा कर रहे हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी के दीक्षा के पचासवें वर्ष पर मेरी हार्दिक प्रणतियां।

महापथिक को आज बधाएँ बारंबार

● **साध्वी मनीषाप्रभा** ●

युगप्रधान योगीश्वर के चरणकमल में वंदन शत बार।
महानिर्ग्रंथ के महापथिक को आज बधाएँ बारंबार।।

संयम की Gold Gubali पर वर्धापित करता मन का पोर-पोर।
अवनि अम्बर में छाई खुशियाँ आज घटा घनघोर।
गुरु महाश्रमण को पाकर पुलकित मन का कोर-कोर।
प्रकृति का कण-कण भी हरियल चुनर ओढ़कर लाई नई बहार।।

गुरु महाश्रमण से जुड़ती रहे जन्म जन्मों की इकतारी।
साँस साँस में वास तुम्हारा नाम तेरा विघ्न-बाधाहारी।
गुरुभक्ति शक्ति में आप्लावित हो सदा तेरी शरणहारी।
पावन चरणों में जो सदा रहता मिट जाता भवोदधि संसार।।

दुग्धस्नात संन्यास का वर्णन करूँ ऐसा जग में शब्द कहाँ?
अरबों खरबों न्यूरोन्स से वंदन करूँ ऐसा स्वर उपलब्ध कहाँ?
अध्यात्म के महासमंदर को माप सकूँ ऐसा प्रज्ञालब्ध कहाँ?
संयम की सरिता में नित नए रत्न खोजूँ दे दो प्रभो! आशीर्वर।।

निस्पृह चेतना आचार्य महाश्रमण

● **समणी भावितप्रज्ञा** ●

आचार्यश्री महाश्रमणजी को कौन नही जानता। क्या सूर्य के प्रकाश से भी कभी कोई अपरिचित रह सकता है? महातपस्वी महाश्रमणजी प्रकाशपुंज है, वे स्वयं प्रकाशमान है और परिपार्श्व के वातावरण को भी प्रकाशमय बनाते हैं। पूज्यश्री का जीवन स्फटिक जैसा पारदर्शी है, जिसमें प्रत्येक मानव का वास्तविक स्वरूप साक्षात् प्रकट हो जाता है।

कहते हैं रामकृष्ण परमहंस को ऐसे शिष्य की जरूरत थी जो उनकी आध्यात्मिक संपदा को सुरक्षित रख सके। उनके पास कुछ जादुई करिश्मे थे, फार्मुले थे। जब नरेन्द्र ने शिष्यत्व स्वीकारा तब उनकी क्षमताओं का आकलन करते हुये वह संपदा उन्हें देनी चाही पर नरेन्द्र ने रामकृष्णजी से कहा- 'गुरुदेव! मुझे यश, नाम, प्रतिष्ठा नहीं चाहिए, मुझे तो अध्यात्म-शिखर तक पहुंचने का मार्ग दिखाओ।' वही नरेन्द्र अध्यात्म पथ पर चलकर विश्व में विवेकानंद के रूप में विख्यात हुये।

आचार्यश्री तुलसी के पास जब मुनि मुदित शिष्य रूप में आये, तब गुरु तुलसी की पैनी नजरों ने मुनि मुदित की आन्तरिक क्षमताओं को देखा परखा, फिर एक दिन जनता के बीच प्रवचन में मुनि मुदित को आगे बुलाया 'महाश्रमण' पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। फिर गुरु तुलसी ने जनता से कहा- 'हम जो काम करते हैं, चिंतनपूर्वक करते हैं, भावुकतावश किसी को आगे नहीं लाते। मैंने जो कुछ किया है वह पूरे विश्वास के साथ किया है।' गुरुदेव ने यह भी फरमाया कि 'महाश्रमण महीने की पहली तारीख उपवास व ध्यान में बिताता है। इसमें अनासक्ति, आध्यात्मिकता नैसर्गिक है, कूट-कूट कर भरी है। यश, ख्याति, नाम की कोई भूख नहीं है। सहजतामय जीवन जीता है। दायित्व का निवर्हन अच्छी तरह से करता है। मुझे संतोष है कि महाश्रमण अपने स्थान पर उपयुक्त है।'

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी एक ऐसे गुरु हैं, जो स्वयं के साथ-साथ दूसरों का उपकार करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जंगलों-पहाड़ों में जाकर साधना करने वाले बहुत मिलेंगे लेकिन भौतिक आकर्षणों के बीच रहकर अनासक्त जीवन जीने वाले सद्गुरु महाश्रमण जैसे दुर्लभ है। जन-जन को यह अनुभूति है कि पूज्यश्री का अणु-अणु, रोम-रोम ज्ञानमय है, साधनामय है। वार्तालाप में अल्पभाषी पर अनुशासन में दृढ व दक्ष है। स्वयं अनुशासन का पालन करने के कठोर पक्षधर हैं। आचार व्यवहार में सात्विक, अति सहज होते हुए भी वे अपनी मर्यादा नियमों के प्रति बड़े जागरुक व अतिदृढ़ हैं। संस्कृत, प्राकृत जैसी प्राचीन भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है। आपश्री ने अपनी प्रखर प्रतिभा व दृढ संकल्प के बल पर अंग्रेजी भाषा पर भी अधिकार प्राप्त किया।

निस्संदेह आचार्य महाश्रमण उस प्रज्ञा का नाम है जो अथाह आगम ज्ञान से जनता को अध्यात्म का गहन बोध दे रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण उस श्रम का नाम है जिसने सुविधावादी युग में भी अथक पुरूषार्थ से देश-विदेश में अहिंसा-यात्रा करके जन-जन का कल्याण किया है, कर रहे हैं। ऐसे युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के ५०वें संयम-पर्याय के उपलक्ष में आगमवाणी से मंगल कामना करते हैं-

'इहं मि उत्तमो भंते। पेच्चा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिहिं गच्छसि नीरओ।।'

हे विश्वबंध युगदृष्टा श्री भैक्षवगण प्रतिपाल।
'महाश्रमण' जैसे गुरु मिले, हम सचमुच मालामाल।।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

विशिष्ट मुनि का अवसान

● **समणी कुसुमप्रज्ञा** ●

तेरापंथ के एक विशिष्ट व्यक्तित्व का नाम था- मुनि महेन्द्रकुमारजी। उनके जाने से श्रुत और शील संपन्न एक व्यक्तित्व की कमी हो गई। ज्ञान और विज्ञान में समन्वय करने वाले एक महान ज्ञानी और प्रयोगधर्मा व्यक्तित्व की क्षति हो गई। बहुश्रुत परिषद् के संयोजक का स्थान रिक्त हो गया। अध्यात्म और विज्ञान को सरसता के साथ पढ़ाने वाले प्राध्यापक का विलय हो गया। जैन विश्व भारती संस्थान को पुष्ट करने वाला कर्मशील व्यक्तित्व अग्रिम यात्रा पर प्रस्थित हो गया। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में अनुपम योगदान देने वाला मुनि अब दिखाई नहीं देगा। आगमों का कार्य करने वाले एवं भाष्य लेखक विशिष्ट मुनि की केवल यशः काया शेष रह गई। एक संघनिष्ठ और जुझारू व्यक्तित्व अदृश्य हो गया। पानी की रेखा के समान आवेश करने वाला मुनि इस दृश्य जगत् से अलविदा हो गया। उन्मुक्त हास्य करने और कराने वाला भिक्षु जय जिनेन्द्र कह गया। तीन-तीन आचार्यों का विशिष्ट कृपापात्र मुनि अंतर्धान हो गया। योगक्षेम वर्ष की व्यवस्थित संयोजना करने वाला अद्भुत प्रतिभा का धनी मुनि परलोक पधार गया। संक्षेप में कहें तो शतावधानी, प्रखर वक्ता, गंभीर लेखक, ज्ञान पिपासु, प्रबल पराक्रमी, आत्मार्थी और सुदर्शन व्यक्तित्व का धनी एक विशिष्ट मुनि सबके दिलों में अपने गुणों की सुवास छोड़कर सदा के लिए इन्द्रधनुष की भांति विलीन हो गया।

यों तो मुनि महेन्द्रकुमारजी स्वामी संघ के प्रायः सभी कार्यक्रमों से जुड़े हुए थे, लेकिन उनके कुछ विशिष्ट अवदान जिनसे कम लोग परिचित हैं, उन्हें मैं प्रकट करना चाहूंगी-

मुमुक्षु बहिनों पर उपकार

आचार्य तुलसी के निर्देश से सन् १९७६ के आस-पास वे मुमुक्षु बहिनों की शिक्षा के प्रभारी बने। उस समय स्नातक वर्षीय जो कोर्स उन्होंने डिजायन किया, उनमें हम २१ बहिनों ने अध्ययन किया। उसी कोर्स की एक विशिष्ट उपलब्धि है- वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी। स्नातक के तीन वर्ष के कोर्स में हम लोगों ने पूरी अर्थ सहित नाममाला, पूरी प्राकृत व्याकरण (तुलसी मंजरी), पूरी कालू कौमुदी की साधनिका आदि का गहन अध्ययन कर लिया। तीन वर्षों में संस्कृत-प्राकृत के लगभग ५० ग्रंथ पढ़ लिए। उस समय उनका अनुशासन भले ही कठोर था, लेकिन व्यक्तित्व निष्पन्न करने वाला था।

समण श्रेणी का अध्यापन

आचार्य तुलसी ने जब समणश्रेणी का प्रवर्तन किया तो महेन्द्र मुनि को विशेष रूप से अध्यापन के लिए नियुक्त किया। आचार्य की अनुपस्थिति में साध्वियों या समणियों के अध्यापन से स्पष्ट है कि वे आचार्यों के कितने विश्वासपात्र थे। वे हमें अंग्रेजी में जैन सिद्धान्त दीपिका पढ़ाते थे तथा बाद में सबको अंग्रजी में बोलने का अभ्यास करवाते थे। अध्यात्म और विज्ञान की सैकड़ों कक्षाओं से समण श्रेणी लाभान्वित हुई है। रिसर्च के किसी भी विषय के बारे में पूछने पर उनका ज्ञान का स्रोत अविरल प्रवाहित होने लगता था।

संघनिष्ठ होकर उन्होंने संघ की जितनी सेवाएं कीं, आचार्यों ने भी उनका मूल्यांकन करने में कोई कमी नहीं रखी। उन्हें अनेक अलंकरणों से अलंत किया गया। इस अपूरणीय क्षति को अनेक संत मिलकर भी पूरा कर सकें तो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अंत में उनके कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और अध्यात्मयोग के प्रति प्रणत होते हुए उनके आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करती हूं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रतिसंलीनता

मानसिक चंचलता कुछ निमित्तों से होती है। उनमें पहला निमित्त इंद्रियाँ हैं। वे जब बाह्य जगत् के साथ संपर्क स्थापित करते हैं, तब मन को चंचल बनाते हैं, इसीलिए साधना की भूमिका में उनको अंतर्मुखी करने का प्रयत्न किया जाता है। उनके अंतर्मुख होने का अर्थ है–विषयों के साथ संपर्क स्थापित न करना। किंतु इस जगत् में यह कब संभव है कि हमारे इंद्रिय विषयों से सर्वथा असम्पृक्त रह सकें? इस कोलाहलमय जगत् में क्या यह संभव है कि कान हो और शब्द सुनाई न दे? इस रूपमय जगत् में क्या यह संभव है कि आँख हों और रूप को न देखे? वायु के साथ प्रवाहित होकर आने वाली गंध को कैसे रोका जा सकता है? रस और स्पर्श के संपर्क को भी सर्वथा नहीं रोका जा सकता। इस स्थिति में हम विषयों से असम्पृक्त एक सीमा में ही रह सकते हैं।

क्या इस स्थिति में हम मानसिक चंचलता को रोकने में सफल हो सकते हैं? नहीं हो सकते। किंतु मनुष्य का शक्तिशाली मस्तिष्क नहीं को हाँ मे बदल देता है। उसने एक विकल्प खोज निकाला कि मन की स्थिरता का अभ्यास करने वाला व्यक्ति विषयों के संपर्क से जितना बच सके, उतना बचे और न बच सकने की स्थिति में वह उनके प्रति अनासक्त रहे। विषयों के असंपर्क और अनिवार्यरूपेण प्राप्त विषयों के प्रति अनासक्ति–ये दोनों मिलकर इंद्रिय प्रतिसंलीनता की प्रक्रिया को पूरा करते हैं।

अभ्यास की अपरिपक्व दशा में विषयों से बचाव करना बहुत उपयोगी है और जैसे-जैसे एकाग्रता का अभ्यास परिपक्व होता जाए, वैसे-वैसे विषयों से बचने की अपेक्षा उनके प्रति होने वाली आसक्ति से बचना बहुत आवश्यक है। विषयों से बचने की प्रवृत्ति हो और अनासक्ति का भाव न हो, उस स्थिति में आंतरिक पवित्रता पर बाह्याचार की विजय होती है। विषयों से बचने का प्रयत्न अनासक्ति की साधना का पहला चरण है। इसलिए उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। सिद्धि का द्वार इन दोनों के सामंजस्य होने पर ही खुलता है।

आसक्ति के कारण व्यक्ति के मन में क्रोध, अभिमान, माया और लोभ के भाव उत्पन्न होते हैं और वे मन को व्यग्र बनाते हैं। उन पर विजय पाए बिना कोई भी व्यक्ति एकाग्रता को परिपुष्ट नहीं बना सकता। और इंद्रियों को भी अंतर्मुखी नहीं बना सकता। कषाय प्रतिसंलीनता के चार साधन हैं–

(१) क्रोध-निवृत्ति के लिए उपशम भावना का अभ्यास।

(२) मान-निवृत्ति के लिए मृदुता का अभ्यास।

(३) माया-निवृत्ति के लिए ऋजुता का अभ्यास।

(४) लोभ-निवृत्ति के लिए संतोष–अपनी आंतरिक समृद्धि के निरीक्षण का अभ्यास।

इन प्रतिपक्ष भावनाओं का पुनः-पुनः अभ्यास करने से कषाय अपने हेतुओं में विलीन हो जाता है।

आंतरिक अनुभूति और शून्यता की गहराई में जाने के लिए सकांतवास बहुत मूल्यवान है। कोलाहलमय वातावरण में हम दूसरों को सुनते हैं किंतु अपने अंतर की आवाज नहीं सुन पाते। रंगीन वातावरण में हम दूसरों को देखते हैं किंतु इस शरीर में विराजमान चिन्मय प्रभु को नहीं देख पाते। एकांतवास में अपने अंतःकरण की आवाज सुनने और अपने प्रभु से साक्षात्कार करने का सुंदर अवसर मिलता है। उससे हमारा मन बाह्य संपर्कों से मुक्त होकर अपने शक्ति-स्रोत में विलीन हो जाता है।

(१७) आत्मानं प्रत्यनुप्रेक्षा स्वाध्यायः।।

(१७) आत्मा के विषय में अनुप्रेक्षा (चिंतन, मनन) करने को स्वाध्याय कहा जाता है।

स्वाध्याय

योग के आचार्यों ने परमात्म-प्राप्ति के दो साधन माने हैं–ध्यान और स्वाध्याय। उन्होंने लिखा है–स्वाध्याय करो और फिर ध्यान। ध्यान करो और फिर स्वाध्याय। इस प्रकार स्वाध्याय और ध्यान का अभ्यास करने से परमात्मा प्रकट हो जाता है–

स्वाध्यायाद् ध्यानमध्यास्तां, ध्यानात् स्वाध्यायमामनेत्।।
स्वाध्याय-ध्यान-संपत्त्या, परमात्मा प्रकाशते।।

स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ है–पढ़ना। साधना के संदर्भ में केवल पढ़ना स्वाध्याय नहीं है किंतु आत्मा के विषय में जानना, विचार करना, मनन करना स्वाध्याय है। यह ध्यान का मूल बीज है। जिसका आत्मविचार स्पष्ट नहीं है, जिसे 'मैं कौन हूँ' इस विषय की स्पष्ट धारणा नहीं है और जिसे आत्मा और शरीर के भदे-ज्ञान का बोध नहीं है, वह ध्यान की उत्कृष्ट भूमिकाओं में कैसे प्रवेश पा सकता है? इसलिए ध्यान के मूल बीज के रूप में स्वाध्याय का बहुत बड़ा महत्त्व है।

(१८) चेतोविशुद्धये मोहक्षयाय स्थैर्यापादनाय विशिष्टसंस्काराधानं भावना।।

(१९) अनित्य-अशरण-भव-एकत्व-अनयत्व-अशौच-आस्रव-संवर-निर्जरा-धर्म-लोक-संस्थान-बोधिदुर्लभता।।

(२०) मैत्री प्रमोद-कारुण्य मध्यस्थताश्च।।

(२१) उपशमादिदृढ़भावनया क्रोधादीनां जयः।।

(१८) चित्त की शुद्धि, मोहक्षय तथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की वृत्ति को स्थिर करने के लिए जो विशिष्ट संस्कार आहित (स्थापित) किए जाते हैं, उनका नाम भावना है।

(१९) भावनाएँ बारह हैं–

(१) अनित्य, (२) अशरण, (३) भव, (४) एकत्व, (५) अन्यत्व, (६) अशौच, (७) आस्रव, (८) संवर, (९) निर्जरा, (१०) धर्म, (११) लोक-संस्थान, (१२) बोधि-दुर्लभता।

इसका बार-बार चिंतन करने से मोह क्षीण होता है, चित्त शुद्ध होता है–संतुलित होता है और कर्तव्य में स्थिरता प्राप्त होती है।

(२०) चार भावनाएँ और हैं–

(१) मैत्री, (२) प्रमोद, (३) करुणा, (४) मध्यस्थता।

इनसे आत्मौपम्य, गुण-ग्रहण-वृत्ति, मृदुता और तटस्थता का विकास होता है।

(२१) उपशम आदि की दृढ़ भावना करने से–उनका बार-बार दृढ़ अभ्यास करने से क्रोध आदि पर विजय प्राप्त होती है।

भावना

'कंटकात् कंटकमुद्धरेत्'–काँटे से काँटा निकालने की नीति साधना के क्षेत्र में भी लागू होती है। चित्त को वासनाओं से मुक्त करना साधक का लक्ष्य होता है, पर पहले ही चरण में दीर्घकालीन वासनाओं को एक साथ निर्मूल नहीं किया जा सकता। उन्हें निरस्त करने के लिए नई वासनाओं की सृष्टि करनी होती है। वे नई वासनाएँ यथार्थपरक होती हैं, इसलिए उनका असत् से संबंधित वासनाओं पर दबाव पड़ता है और वे उनसे अभिभूत हो जाती हैं।

वासना का ही दूसरा नाम भावना है। शास्त्रीय ज्ञान या शब्द ज्ञान का जो सहारा लिया जाता है, वह वासना है। इसे भावना, जप, धारणा, संस्कार, अनुप्रेक्षा और अर्थचिंता भी कहा जाता है और ये सब स्वाध्याय के ही प्रकार हैं।

जैन साधना पद्धति में 'भावनायोग' शब्द का व्यवहार हुआ है। भावना से मन आत्मा या सत्य से युक्त होता है, इसलिए यह योग है। भावना में ज्ञान और अभ्यास इन दोनों के लिए अवकाश है।

भावनाओं के प्रकार असंख्य हो सकते हैं। उन्हें किसी वर्गीकरण में नहीं बाँधा जा सकता, फिर भी दिशा-निर्देश के रूप में एक-दो वर्गीकरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रथम वर्गीकरण में बारह भावनाओं का उल्लेख है–

(१) अनित्य, (२) अशरण, (३) भव, (४) एकत्व, (५) अन्यत्व, (६) अशौच, (७) आस्रव, (८) संवर, (९) निर्जरा, (१०) धर्म, (११) लोक-संस्थान, (१२) बोधि-दुर्लभता।

अनित्य भावना

जितने संयोग हैं, उनका अंत वियोग में होता है–संयोग विप्रयोगाऽन्ताः–फिर भी चिर संपर्क के कारण मनुष्य संयोग को शाश्वत मान बैठता है और जब उसका वियोग होता है, तब वह उसके लिए आकुल हो उठता है। यह आकुलता, दुःख और ताप वस्तु के वियोग से नहीं होता किंतु उसके संयोग के प्रति शाश्वत की भावना होने से होता है। अनित्य भावना का प्रयोजन चित्त में (संयोग और वस्तु की नश्वरता के प्रति) अशाश्वतता की भावना को पुष्ट बनाए रखता है। इस भावना का अभ्यासी साधक वियोग को नहीं रोक सकता किंतु उससे प्रवाहित होने वाली दुःख की धारा को रोक सकता है।

अशरण भावना

मनुष्य अपूर्ण है। वह अपूर्ण है, इसलिए बाह्य वस्तुओं के द्वारा पूर्ण होने का प्रयत्न करता है। उसे दुःख, अशांति, दरिद्रता आदि अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह उस संघर्ष में विजयी होने के लिए दूसरों का सहारा चाहता है, त्राण और शरण की अपेक्षा रखता है। सामाजिक जीवन में सहारा, त्राण और शरण मिलती भी है किंतु यह तात्कालिक सत्य है। त्रैकालिक सत्य यह है कि अपने पुरुषार्थ पर आदमी निश्चित रूप से भरोसा कर सकता है, इसलिए वस्तुतः सहारा, त्राण या शरण अपने पुरुषार्थ में ही है, अन्यत्र नहीं है। इस अंतिम सच्चाई के आधार पर स्वयं में स्वयं का त्राण खोजना और दूसरों के त्राणदान में ऐकान्तिक व आत्यंतिक कल्पना का करना–अशरण भावना है। इस भावना से भावित मनुष्य का कर्तृत्व प्रबल हो उठता है और दूसरों के द्वारा विश्वासघात होने पर उसका धैर्य विचलित नहीं होता।

भव भावना

इस दुनिया में सब प्राणी समान नहीं हैं और सब मनुष्य भी समान नहीं हैं। बुद्धि, वैभव और क्षमता भिन्न-भिन्न हैं। जिसके पास ये साधन होते हैं, उसका मन गर्व से भर जाता है और जिसके पास ये नहीं होते हैं, उसमें हीन भावना पनपती है। इस दोहरी बीमारी की चिकित्सा भव-भावना है। यह संसार परिवर्तनशील है। इसमें कोई भी व्यक्ति निरंतर एक स्थिति में नहीं रहता। एक जन्म में एक व्यक्ति अनेक स्थितियों का अनुभव कर लेता है। अनेक जन्मों में तो वह न जाने क्या-क्या अनुभव करता है। जो व्यक्ति इस परिवर्तन की भावना से भावित होता है, उसके मन में गर्व या हीन भावना की बीमारी पैदा नहीं होती।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(८) लब्ध्वा मनुष्यतां धर्मं, शृणुयाच्छ्रद्दधीत यः।
वीर्यं स च समासाद्य, धुनीयाद् दुःखमर्जितम्।।

मनुष्य-जन्म को प्राप्त होकर जो धर्म को सुनता है, श्रद्धा रखता है और संयम में शक्ति का प्रयोग करता है, वह व्यक्ति अर्जित दुखों को प्रकंपित कर डालता है।

इन श्लोकों (४ से ८) में (१) मनुष्यता, (२) धर्म-श्रुति, (३) श्रद्धा और (४) तप-संयम में पुरुषार्थ–इन चार अंगों की दुर्लभता का प्रतिपादन है। जीवन के ये चार प्रशस्त अंग-विभाग हैं। ये अंग प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा सहज प्राप्य नहीं हैं। चारों का एकत्र समाहार विरलों में पाया जाता है। जिनमें ये चारों नहीं पाए जाते वे धर्म की पूर्ण आराधना नहीं कर सकते। एक की भी कमी उनके जीवन में लंगड़ापन ला देती है।

दुर्लभ त्रयमेवैतद्, देवानुग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं, महापुरुषसंश्रयः।।

शंकराचार्य ने तीन दुर्लभ बातों का कथन किया है–मनुष्यत्व, मुमुक्षा-भाव और महापुरुषों का सहवास। चार और तीन में विशेष अंतर नहीं है। एक बात स्पष्ट है कि मानव जीवन दुर्लभ है। मनुष्य की विकसित चेतना यह स्पष्ट करती है कि अतीत में ज्ञात या अज्ञात दशा में मानवीय शरीरस्थ आत्मा ने कोई विशेष पुण्य प्रयत्न किया था, जिसके कारण यह देह मिली है। चौरासी लाख योनियों की अनंत-अनंत यात्राओं के बाद कभी इस जन्म में आने का सौभाग्य मिलता है। इसका महत्त्व इसलिए है कि मनुष्य जीवन सेतु है। अन्य जीवन कोई सेतु नहीं है। वे किसी न किसी किनारे का जीवन जी रहे हैं। मनुष्य बीच में आ गया। उसके हाथ में वह सत्ता आ गई कि चाहे तो उस पार जा सकता है, जहाँ परम तत्त्व का प्रत्यक्षीकरण है और चाहे फिर नीचे गिर सकता है। नीचे गिरने का अर्थ होगा–वह चौरासी लाख योनियों का जीवन। **'नो सुलभं पुणरावि जीवियं'** मानव जीवन की पुनः प्राप्ति सुलभ नहीं है। यह अनुभूत सत्य की उद्घोषणा है।

मेघ को महावीर ने यही कहा–'तू देख, कैसे यहाँ आया है? कहाँ से आया है? तू स्वयं मर गया किंतु खरगोश के शरीर पर पैर नहीं रखा। उसी अहोभाव के कारण हाथी की योनि से सम्राट् के घर मेघरूप में उत्पन्न हुआ है। अब सत्य की दिशा में विघ्नों के कारण आगे बढ़ने से कतराता है?' मेघ की सोयी चेतना प्रबुद्ध हो उठी। कोई न कोई ऐसी घटना हमारे सबके जीवन में घटी है। संत सबके भीतर उसी संभावना को देखकर जगा रहे हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ४ : ज्ञानावरणीय व दर्शनावरणीय कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : ज्ञानावरणीय कर्म बंध के छह कारण हैं–
(१) ज्ञान और ज्ञानी से प्रतिकूलता रखना, (२) ज्ञान और ज्ञानी की निंदा, अवहेलना करना, (३) ज्ञान-प्राप्ति में अंतराय (बाधा) डालना, (४) ज्ञान व ज्ञानी से प्रद्वेष करना, (५) ज्ञान व ज्ञानी की आशातना करना, (६) ज्ञान व ज्ञानी के वचनों में विसंवाद अर्थात् विरोध दिखाना।
उपरोक्त इन छह कारणों में ज्ञान के स्थान पर दर्शन शब्द जोड़ने पर दर्शनावरणीय कर्म बंध के कारण बन जाते हैं।

प्रश्न ५ : वेदनीय कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : सात वेदनीय कर्म बंध के छह कारण हैं–
(१) प्राण, भूत, जीव, सत्त्व को अपनी असद् प्रवृत्ति से दुःख न देना, (२) दीन न बनाना, (३) शोक पैदा न करना, (४) न रुलाना, (५) लाठी आदि से प्रहार न करना, (६) परितापित न करना।
इनसे विपरीत प्रवृत्ति करने पर असात वेदनीय कर्म बंध के कारण बनते हैं।

प्रश्न ६ : मोहनीय कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म बंध के छह कारण हैं–
(१ - ४) तीव्र क्रोध, मान, माया, लोभ, (५) तीव्र दर्शन मोह–मिथ्यात्व, (६) तीव्र चारित्र मोह–नौ नो कषाय रूप।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी
श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

संबंधों की शर्त

भंडारीजी की धार्मिक लगन इतनी उत्कृष्ट थी कि उनके परिवार का कोई भी व्यक्ति उस रंग में रंगे बिना नहीं रह पाता था। साधु-साध्वियों के प्रति उनका आदर-भाव बहुत गहरा था। उनके पद का गौरव भी उसमें कभी बाधक नहीं बन पाया। एक बार कुछ उच्च राज्याधिकारी, जो कि ओसवाल समाज के ही थे, भंडारीजी से कहने लगे–'हम लोग आपके परिवार में बेटी देने में इसलिए संकोच करते हैं कि आपके परिवार की स्त्रियाँ साधु-साध्वियों के आगमन तथा विदाई के समय उनके पीछे-पीछे पैदल जाती हैं।'

भंडारीजी ने भी उतनी ही स्पष्टता से उत्तर देते हुए कहा–'हाँ, यह आप लोगों के लिए पहले से ही सोच लेने की बात है। मेरे घर में कुलवधू बनकर आएगी उसे तो साधु-साध्वियों के गमनागमन पर उनके पीछे-पीछे पैदल चलना आवश्यक होगा।'

एक राजाज्ञा; एक पारितोषिक

भंडारीजी ने समय-समय पर धर्मसंघ की सेवाओं में अपना बहुत ही मौलिक योगदान दिया। सेवा की अनेक घटनाओं में से एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना अग्रोक्त है। सं० १९२० में जयाचार्य ने मुनिपतजी को चूरू में दीक्षा प्रदान की। मुनिपतजी के पिता जयपुर-निवासी थानजी चोपड़ा के यहाँ गोद आए थे, परंतु परस्पर अनबन हो जाने के कारण उनसे पृथक् हो गए। भावी वशात् पृथक् होने के पश्चात् शीघ्र ही उनका देहांत हो गया। ऐसी विपन्न अवस्था में भी थानजी ने लगभग बारह वर्षों तक अपनी पुत्र-वधू तथा पोते की कोई सार-संभाल नहीं ली। इसी अवधि में माता तथा पुत्र को विराग हो गया। जयाचार्य ने पहले मुनिपतजी को उनकी माता की आज्ञा लेकर दीक्षित किया तथा लगभग छह महीने पश्चात् उनकी माता को भी दीक्षा प्रदान की।

इस दीक्षा के थोड़े दिन पश्चात् जब जयाचार्य लाडनूं विराजमान थे तब थानजी ने जोधपुर-नरेश तख्तसिंहजी के सम्मुख इस आशय का एक आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया कि आचार्य जीतमलजी ने मेरे पोते को बहकाकर मूंड लिया है, अतः उन्हें गिरफ्तार किया जाए और मुझे मेरा पोता दिलाया जाए। वे इस समय लाडनूं में हैं। नरेश ने सत्यासत्य की खोज किए बिना ही उस बात पर विश्वास कर लिया और आदेश दे दिया कि दस सवार भेजकर गुरु और शिष्य को पकड़ लिया जाए तथा शीघ्र ही उन्हें मेरे सम्मुख उपस्थित किया जाए। इस आदेश के अनुसार तत्काल वहाँ से दस घुड़सवार रवाना कर दिए गए। जोधपुर से लाडनूं लगभग दो सौ किलोमीटर दूर है।

थानजी की पहुँच इतनी नहीं थी, किंतु इस सारी घटना के पीछे फलोदी के ढड्ढा परिवार का हाथ था। उन्होंने ही थानजी को उकसाया कि तुम पुकार लेकर जाओ, हम पूर्ण रूप से तुम्हारी सहायता करेंगे। थानजी स्वयं तेरापंथ के विरोधी थे, परंतु ढड्ढा परिवार तो और भी अधिक उग्रता से विरोध रखता था। वह परिवार धनाढ्य होने के साथ-साथ राज्य में पहुँचे वाला भी था। उन लोगों को तेरापंथ से इतना द्वेष इसलिए था कि उनके परिवार की एक वधू सरदार सती ने दीक्षा लेनी चाही थी। वे बाल-विधवा थी। वर्षों तक अनुनय-विनय करने पर जब उन्हें आज्ञा नहीं दी गई तब उन्होंने आजीवन सागारिक अनशन कर दिया। इस पर उन्हें बाध्य होकर आज्ञा देनी पड़ी। वे नहीं चाहते थे कि उनके घर की कोई वधू भिक्षुणी बनकर भीख माँगती फिरे, किंतु फिर भी वैसा हुआ। सरदार सती ने जयाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण की थी। वे लोग उस समय तो कुछ नहीं कर सके, पर अब यह एक अच्छा अवसर समझकर उन्होंने थानजी को आगे कर दिया और उनकी ओट में स्वयं कार्य में लग गए।

इस षड्यंत्र का किसी प्रकार से बहादुरमलजी भंडारी को पता लग गया। उन्होंने थोड़ी खोज-बीन की तो सारी घटना सामने आ गई। उन्हें यह जानकर बड़ी चिंता हुई कि नरेश ने आज दस घुड़सवार लाडनूं की ओर भेज दिए हैं। सारी बात की व्यवस्थित जानकारी होते ही उन्होंने यथाशीघ्र लाडनूं में जयाचार्य तथा स्थानीय श्रावकों के पास उपर्युक्त घटना के समाचार पहुँचाने के लिए एक पत्र-वाहक को शीघ्रगामी ऊँट पर भेजा। उसके पश्चात् वे अविलंब तैयार होकर नरेश से मिलने के लिए गए। रात हो चुकी थी। नरेश अंतःपुर में जा चुके थे। उन्होंने रात्रिकालीन परिधान भी धारण कर लिया था। उसी समय भंडारीजी ने पहुँचकर 'नाजरजी' के माध्यम से मिलने की आज्ञा माँगी, नरेश ने कहलाया कि अब तो मैं कपड़े भी बदल चुका हूँ, अतः प्रातः मिल लेना। भंडारीजी ने भी तत्काल सूचना करवाई कि प्रातः कोई अन्य चाहे मिल ले, भंडारी का तो शव ही मिलेगा। नरेश ने शब्दों के पीछे रहे गंभीर अर्थ की ओर ध्यान दिया और तत्काल बाहर मिले।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *वर्तमान को सुनियोजित ढंग से जीने के लिए हम भगवान महावीर की वाणी को हृदयंगम करें। जो भगवान महावीर की आराधना करता है, उसे अनंत शक्ति प्राप्त होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर उद्‌गार

Acharya Mahashraman: An Epitome of Virtues

● **Samani Pranav Pragya** ●

I consider myself fortunate to express my reverence for His Holiness Acharya Mahashramanji. Venerable Gurudev is guiding light, the Paragon of devotion and the embodiment of divinity. In his presence everyone feels a strange serenity and experience the flow of celestial power and purpose. He is an epitome of virtues. we worship him as a true ambassador of Lord Mahavira's teachings. While addressing common masses his preaching brings a new light and shows the right path. The purity of his spiritual practice (sadhana) is constantly reflected through his personality. His divine aura has magnetic power that always attracts followers. Each and every action of his teaches the ideal lesson of morality. Rarely do we find such an unmoved mover, a real sthita-pragya, on this earth.

It is a challenging task to summarise personality of a great saint like Acharya Mahashraman in limited words. His life is an amalgamation of various virtues. I would like to throw light on some of his Speafic attributes that greatly influenced me. They and enlisted below:

1. Control Over Senses (Indriya samyam) - The first virtue is of mastery over senses and mind. Acharya Mahashraman is a highly industrious person. His trained mind and body made this possible to traverse a great distance on foot everyday (except rainy season), deliver public speech, editing Agam texts, speaking to shravakas, uttering Jay innumerable times for the devotees, Counselling and directing people, responding to hundreds of messages besides all his ascetic duties. All these activities prove his alertness of body and mind.

2. Punctuality - In Dasavakalika Sutra, Lord Mahavira says "Kale Kalam samayare i.e. a monk must be punctual. He should be conscious of discharging his duties on time. Acharya Mahashraman is a living legand of this aphorism. By observing his keen awareness about time, it is difficult to say either he respects the time or time pays respect and remain devoted to His Holiness.

In this context, I must mention an incident that took place during Jasol chaturmas. A few volunteers wanted to have a meeting with Acharya shri, who was very busy at that time. So could not give time on that perticular day. Volunteers pleaded Gurudev to hold the meeting with them as early as possible. Gurudev agreed to do so the next day. The volunteers had to leave the next day because of their air tickets. Acharya shree paused for a moment and found a solution. His Holiness asked them to come at 4 a.m. early in the morning for the meeting. The volunteers were shocked to hear about the early hours but they agreed to be present at that time.

In the early morning volunteers were amazed to see Gurudev sitting outside and waiting for them. This illustration itself reveals and reflects the importance of time in his life.

3. True Dedication - The third quality that wins the heart of each individual of Terapanth Dharma Sangha is true dedication towards his sect. In Sardarshahar, when he was enthroned on the post of Acharya, his first declaration was he would try to keep the mental peace (citta samadhi) of every ascetic disciple and all the lay followers.

It was not mere a declaration, he put his heart and soul to fulfil his resolution. Many times he Sacrificed his own comforts. In order to make others comfortable. He has plunged himself into the spirit of Terapanth dharma sangha.

4. Humbleness - This ethical virtue is reflected through him in an astounding manner. Acharya Mahashraman is a live example of humbleness. His peak of humility was experienced by all on the occassion of his meeting with shashanmata (a head nun of Terapanth nuns). It was indeed a historical moment when not only did he give darshan to shashanmata, but also he paid his respect to her. All this was accomplished after walking 47 kilometer a day. He experssed his venerance for her by kneeling infront of her. It astonished every one present there.

These are the virtues which cast an indelibal impression on all those who come in contact with him. Let me conclude with a story. Once a mentor wanted to know from his pupils that what they want from him. The desires should be written on a piece of paper. All disciples expressed their various wishes. Among them there was one who just drew a picture of an eye. When asked to interpret the picture, he just folded his hands and spoke in a humble way "O Gurudev! I request you to shower your affectionate and lovable glance on me till the end of my life."

Similarly on the occassion of his Holiness' 50th Diksha Divas, I humblely request Acharya shri to shower his benevolent blessings. on me till my last breath. May you continue to enlighten humanity for a very long time. I wish you enable me to imbibe all above mentioned virtues.

आरती

● **समणी आदर्शप्रज्ञा** ●

ऊँ जय नेमानंदन
तव चरणों गुरूवर, निशदिन करूं वंदन।।
ऊँ जय नेमानंदन

नाम है मंगलकारी, संकटहारी है। हो प्रभु
सुखकारी, भयहारी, महिमा भारी है।।
ऊँ जय नेमानंदन

जाप जपो गुरूवर का, कारज सब सारै। हो गुरु
तन से मन से ध्यावै, भवसागर तारे।।
ऊँ जय नेमानंदन

करूणा के सागर हो, करूणा रस बरसै। हो प्रभु
तव शुभ दृष्टि पाकर, सबके मन हरसै।।
ऊँ जय नेमानंदन

चरण शरण में आई, तुझ से क्या मांगू। हो प्रभु
समता भाव बढे बस, यह आशिष चाहूं, वीतराग बन जाऊँ।।
ऊँ जय नेमानंदन

दुनिया में संघ अनेकों है

● **समणी विपुलप्रज्ञा** ●

दुनिया में श्रमण अनेकों है, गुरु महाश्रमण का क्या कहना।
दुनिया में तपस्वी अनेकों है, महातपस्वी गुरु का क्या कहना।।

तव लक्ष्य है आत्म साधना, बस पावन हो आराधना।
पच्चास वर्ष संयम जीवन, गोल्डन जुबली का क्या कहना।।

ना राग की लहरे चलती है, ना द्वेष तरंगे आती है।
पल-पल आत्मा में रमण करे, वीतराग तुल्य का क्या कहना।।

गुरु पाप ताप संताप हरे, हम महाश्रमण का ध्यान धरे।
ऊँ ह्रीं श्रीं महाश्रमण गुरुवे, इस गुरुमंत्र का क्या कहना।।

तेरे बोल बड़े अनमोल है, आचार पक्ष बेजोड़ है।
कोई पोल नहीं अनुशासन में, इस अनुशास्ता का क्या कहना।।

गुरु महाश्रमण महा काम करे, भिक्षु शासन का नाम करे।
नस-नस में बसे भिक्षुवाणी, महामना भिक्षु का क्या कहना।।

गुरु तुलसी की परछाई है, महाप्रज्ञ से करूणा पाई है।
हर जन-मन विपुल करे वंदन, नेमानंदन का क्या कहना।।

गुरुदेवाय नमः

● **समणी मृदुप्रज्ञा** ●

शासन शेखर दिव्य दिवाकर
युगप्रधान गणराज
करें नतमस्तक वंदन
जय-जय नेमानंदन।।

मंगल गाएं, आज बधाएं
महाश्रमण गुरुराज
जय-जय ज्योति चरण
जय-जय महाश्रमण।।

युगों-युगों राज करो, विश्वमैत्री करूणा के पुजारी
श्रम-शम-उपशम, नैतिकता गूंजे निर्मलधारी
महातपस्वी योगीराज की, शरण सदा सुखकार।
जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।।

नयनों में वत्सलता है, वचनों में रहती ज्ञान चेतना
निर्लिप्त जीवन मुस्कान, संजीवन बन हरती वेदना
महावीर हो अनुगामी, बन चले परमार्थ की ओर।
जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।।

क्रोध का बोध कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में क्रोध नियंत्रण कार्यशाला का आयोजन माई होम भुजा में किया गया। हाइटेक सिटी में प्रवासित जैन समाज के अनेक भाई-बहनों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि रिएक्शन लेस जीवन के लिए ब्रेन को ट्रेन करना पड़ता है। मंत्र जप, प्रेक्षा आदि के द्वारा क्रोध को जीता जा सकता है। क्रोध के दो कारणों की विस्तार से चर्चा करते हुए आपने कहा कि हारमोंस, इच्छा दमन, स्वार्थ की अपूर्ति, शारीरिक-मानसिक कमजोरी इत्यादि कई कारण हो सकते हैं, लेकिन आप संकल्पपूर्वक इस वृत्ति से मुक्त हो सकते हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ माय होम भुजा की महिलाओं द्वारा स्वागत गान से हुआ। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० शौर्यप्रभा जी ने किया। सरिता चिंडालिया ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सिकंदराबाद सभा के मंत्री सुशील संचेती, परामर्शक बाबूलाल सुराणा आदि की उपस्थिति रही।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

आचार्य महाश्रमण की कृति

❐ साध्वी ख्यातयशा ❐

वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातःकाल ही सूचना दी थी कि आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में नई साध्वीप्रमुखा की नियुक्ति करने का यथासंभवतया भाव है। हर मुख पर एक ही प्रश्न–आचार्यप्रवर किसे नवम् साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत करेंगे। सर्वत्र हलचल। विशेष रूप से साध्वियों के स्थान पर हलचल। संपूर्ण वातावरण ही बन गया चंचल। सारी साध्वियाँ एक ही कार्य में व्यस्त। किस प्रकार करें। नवम् साध्वीप्रमुखा का अभिनंदन? अनेक कार्यों का एक साथ संपादन। अभिनंदन पत्र की साज-सज्जा तथा लेखन। गीत निर्माण तथा गायन, नई पछेवड़ी, प्रमार्जनी तथा नव रजोहरण का व्यवस्थिकरण, मनोनयन के पश्चात् नव साध्वीप्रमुखाजी का स्थान पर कैसे करेंगे स्वागत और अभिनंदन। हर साध्वी के मन में एक ही उमंग अद्वितीय तरीका हो स्वागत का। कार्यक्रम में कहीं विलंब से न पहुँचे इसलिए सारी साध्वियों के मस्तिष्क मानो मशीन की तरह कार्य करने लग गए। नई कल्पना व नई योजना के साथ साध्वियाँ सरदारशहर, तेरापंथ भवन में पहुँचीं। संपूर्ण प्रांगण खचाखच भरा हुआ था। हजारों नयन उस दृश्य को देखने के लिए लालायित थे। वे अपलक आचार्यप्रवर को निहार रहे थे। वे आचार्यप्रवर की दृष्टि, इंगित तथा भावों को पढ़ने का प्रयास कर रहे थे, पर असमर्थता का अनुभव कर रहे थे।

आचार्यप्रवर ने मनोनयन पत्र को हाथ में लिया, लोग उत्कर्ण हो उठे। आचार्यप्रवर ने फरमाया–हमारा धर्मसंघ विशाल है, उसमें पाँच सौ से अधिक साध्वियाँ हैं। उनमें से एक नाम घोषित करना है मैं अपना मानसिक निर्णय आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

अर्हम्

श्री भिक्षु भारीमाल रायचंद्र जयजस मघवा माणक डालचंद कालू तुलसी महाप्रज्ञ गुरुभ्यो नमः। आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी, विक्रम संवत् २०७८ रविवार, दिनासंक १५ मई, २०२२ के दिन मैं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के स्थान पर साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी को नियुक्त करता हूँ। उन्हें साध्वीप्रमुखा मनोनीत करता हूँ।

जय-जय ज्योतिचरण-जय-जय महाश्रमण की ध्वनि से संपूर्ण सरदारशहर भवन का प्रांगण तरंगित हो उठा और उसकी गूँज देश-विदेश तक पहुँच गई। आचार्यश्री की एक घोषणा हजारों प्रश्नों को समाहित करने वाली थी। वह घोषणा हजारों मन को आश्वस्त करने वाली थी। वह घोषणा हजारों व्यक्तियों के विश्वास को विश्वस्त करने वाली थी। मेरे मन में एक जिज्ञासा अवशेष रह गई कि आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षा दिवस को ही साध्वीप्रमुखा मनोनयन दिवस के रूप में क्यों चुना?

गुरु अंतर्यामी होते हैं। उन्होंने प्रथम दिन से ही मुझे समाधान की दिशा प्रदान कर दी। आचार्यश्री ने अद्भुत और अद्वितीय तरीके से साध्वीप्रमुखाजी का मनोनयन किया। उन्होंने अपनी ऊर्जा से परिपूरित रजोहरण तथा प्रमार्जनी नव निर्वाचित साध्वीप्रमुखाजी को प्रेषित किया। बहुत साध्वियों ने नया रजोहरण तथा प्रमार्जनी प्रदान करवाए, ऐसा निवेदन किया, पर आचार्यप्रवर अपने निर्णय पर अडिग थे। कुछ दिनों पश्चात् आचार्यप्रवर ने प्रवचन में फरमाया कि साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यमुनि तथा साध्वीवर्या अब तीनों मेरे द्वारा नियुक्त हैं अर्थात् आचार्यप्रवर की ही कृतियाँ हैं। उस दिन मेरे मन का वह प्रश्न समाहित हो गया। साध्वीप्रमुखाजी आचार्यप्रवर की अपनी ही कृति है अतः आचार्यप्रवर ने अपना रजोहरण, प्रमार्जनी ही नहीं अपितु अपना दीक्षा दिवस भी मनोनयन दिवस के रूप में तथा अपनी जन्मभूमि को भी मनोनयन भूमि के रूप में साध्वीप्रमुखाजी को प्रदान कर दी। आचार्यश्री ने केवल साध्वीप्रमुखाजी को बनाया ही नहीं, अपितु प्रतिष्ठित भी किया।

जिस प्रकार एक बागवाँ बीज बोने के बाद उसे खाद, पानी आदि से सिंचन देता है, उसका संरक्षण करता है। तभी वह बीज पल्लवित, पुष्पित होकर वृक्ष का रूप लेता है। उसी प्रकार सरदारशहर के पश्चात् जिन-जिन श्रद्धा के क्षेत्रों में आचार्यप्रवर पधारते। उस दिन प्रवचन में प्रायः फरमाते–साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के महाप्रयाण के बाद साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का प्रथम स्थान है, सर्वोपरि स्थान है। ये हमारे कार्यक्षेत्र से जुड़ी हुई हैं, व्याख्यान भी देती है, साध्वियों की सार-संभाल भी कर रही है। बहुत अच्छे से सेवा देती रहे, स्वाध्याय अच्छा रहे।

आचार्यप्रवर ने केवल साध्वीप्रमुखाजी को प्रतिष्ठित ही नहीं किया, बल्कि उनकी हर इच्छा का भी ध्यान रखते हैं। उन्होंने किसी संदर्भ में कुछ कह दिया तो उनकी बात को बहुमान भी देते हैं।

एक दिन मध्याह्न में साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर से पूछा कि आचार्यप्रवर के यात्रा पथ में सौराष्ट्र कब आ रहा है? आचार्यप्रवर ने फरमाया–साध्वीप्रमुखाजी ने पहले भी फरमाया था और आज फिर जिज्ञासा प्रस्तुत की है। हमें पालीताणा तथा गिरनार इन दोनों को सूरत या अहमदाबाद चातुर्मास से पहले या बाद में लेने का प्रयास करता है। इसके लिए भले कच्छ में अल्प समय लगाना पड़े। इसके लिए भले बाव तथा सिद्धपुर छोड़ना पड़े। गांधीधाम और भुज में ७-८ दिन ही देना पड़े। पालिताणा और गिरनार–दोनों को स्पृष्ट करने का प्रयास करना है। हम केवल भुज में मर्यादा महोत्सव से बंधे हुए हैं। शेष स्थानों में कितना समय लगाना हमारे हाथ में है और संभव हो सके तो नक्शा आदि की सहायता से सूरत से अहमदाबाद तक, अहमदाबाद से छोटी खाटू तक और मुंबई मर्यादा महोत्सव से सूरत तक की मोटा-मोटी रूप में यात्रा हमें अवगत करा दें।

चाहे चातुर्मास हो या विहार, सर्दी हो या तीक्ष्ण गर्मी या बरसात का मौसम। साध्वीप्रमुखाजी प्रायः महीने में सात उपवास करते हैं। एक दिन मध्याह्न की सेवा के समय आचार्यप्रवर ने फरमाया–साध्वीप्रमुखाजी 'महीने में ७ उपवास करते हैं, इसमें कटौती की जा जाए तो कैसा रहे! उपवास के संदर्भ में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के लिए यह guideline दी जा रही है। माघ कृष्णा एकम् से आषाढ़ शुक्ला एकम् इन छह महीनों में शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्ष की अष्टमी को उपवास नहीं करना चाहिए। अतः महीने में पाँच उपवास हो तो ठीक है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में चार विगय वर्जन करे तो अनुकूल लग रहा है। सात या पाँच उपवास करने भी जरूरी नहीं हैं। अनुकूलता का ध्यान रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

२२ जुलाई, छापर में, आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी को बख्शीश करते हुए फरमाया–साध्वीप्रमुखाजी को हमेशा के लिए आलोयणा के उपवास करने से सादर मुक्त किया जा रहा है तथा चार दवाई की भी विगय बख्शीश की जा रही है।

एक दिन आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी का समय नियोजन करवाते हुए फरमाया–सामान्यतया सूर्योदय से दिन के लगभग तीन बजे के बीच में जितना समय उपलब्ध हो जाए वह पण्णवणा के कार्य में तथा दिन के तीन बजे के ठीक बाद से फिर सूर्योदय तक जितना समय उपलब्ध हो जाए वह आचार्य महाप्रज्ञ के इतिहास लेखन में लगाना चाहिए। सामान्यतयाः यथासंभव इस प्रकार समय का विभाजन रखना चाहिए।

१ अगस्त, छापर में आचार्यप्रवर की सन्निधि में दो छोटी साध्वियों की तपस्या चल रही थी। उन दोनों साध्वियों की गुरुदेव से संदेश लेने की इच्छा थी, पर उस समय साध्वियों को तपस्या का संदेश देना बंद था। दोनों साध्वियों ने साध्वीप्रमुखाजी को गुरुदेव के संदेश के लिए निवेदन किया। प्रमुखाश्री जी ने आचार्यप्रवर को संदेश के लिए निवेदन किया। साध्वीप्रमुखाजी की बात रखने के लिए आचार्यप्रवर ने उन दोनों साध्वियों को संदेश दे दिया।

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य सर्वेसर्वा होते हैं। वे सर्वाधिक संपन्न होते हैं तो सर्व दायित्व संपन्न भी होते हैं। धर्मसंघ में दीक्षित हर चारित्रात्मा की सेवा, स्वास्थ्य तथा चित्त समाधि के दायित्व का भार आचार्यप्रवर के कंधों पर रहता है। ऐसे व्यस्ततम समय में भी आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी के संदर्भ में साध्वियों को छोटी सी छोटी बात सिखाई। आचार्यप्रवर ने प्रायोगिक रूप में हर छोटी बात का प्रशिक्षण दिया।

साध्वीप्रमुखा मनोनयन के दूसरे दिन १६ मई प्रातःकाल में आचार्यप्रवर ने फरमाया–साध्वीप्रमुखाजी के स्वास्थ्य के लिए परिचारक वर्ग की मुखिया साध्वी मुदितयशा जी ध्यान रखें। पथ्य परहेज दवा आदि कोई व्यवस्था हो, उसे समायोजित करने में तत्परता रखें।

१८ मई, साध्वीप्रमुखाजी वंदनार्थ आचार्यप्रवर के स्थान पर पधारीं। वंदना के पश्चात् आचार्यश्री ने छोटी साध्वी को संबोधित करते हुए फरमाया–देखो, इस समय तीन कार्य करने होते हैं। चरणों में गिदली लगाना, साध्वीप्रमुखाजी के हाथ से ओघा लेना तथा कुर्सी पर लुंकार लगाना। इनमें कौन-सा पहले करना चाहिए? पहले चरणों में गिदली लगानी चाहिए, फिर प्रमुखाजी के हाथ से ओघा लेना तथा उसके बाद कुर्सी पर लुंकार लगाना चाहिए। अथवा एक साध्वी गिदली लगाए तथा दूसरी साध्वी साध्वीप्रमुखाजी के हाथ से ओघा ले सकती है।

१९ मई, उपवास के दूसरे दिन साध्वीप्रमुखाजी वंदनार्थ पधारे। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि 'काल उपवास जणा आज पारणो हुंसी? अठै ही पारणो कर लो भले'। प्रमुखाजी ने निवेदन किया–नवकारसी है। आचार्यप्रवर ने फरमाया–'सतियाँ ध्यान दे लेसी अठूं ही कोई व्रत निपजा लेसी'।

२० मई, मध्याह्न की चिलचिलाती धूप, तीव्र लू के थपेड़े। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियाँ आचार्यप्रवर के उपपात में पहुँची। वाचन आदि कार्य संपन्न होने पर आचार्यप्रवर ने पूछा–साध्वीप्रमुखाजी को पानी पिला दिया क्या? साध्वियाँ–तहत्! आचार्यप्रवर–कहाँ से पिलाया। साध्वियाँ–तुम्बे से (तुम्बाल पेटा हुआ है)। आचार्यप्रवर–ये पानी तो गर्म हो गया होगा। एक काम किया करो हमारे यहाँ तो भटकी रहती है, इसका व्रत निपजा दिया करो। मध्याह्न में पधारते समय दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। स्थान से निकलने से पहले पानी पिलाना तथा सिर पर लुंकार ढककर पधारे।

एक दिन विहार के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी वंदनार्थ पधारे। पाक्षिक संबोध के मध्य आचार्यप्रवर ने साध्वियों को शिक्षा फरमाई कि पद का सम्मान होना चाहिए। साध्वीप्रमुखाजी का भी सम्मान करना चाहिए। उनको धर्मास्तिकाय की तरह हाथ का सहारा देना चाहिए। वे सहारा ले या न ले। हमें उनको सहारा देना चाहिए।

छापर चातुर्मास में साध्वियों के स्थान अलग-अलग थे। आचार्यप्रवर साध्वियों के स्थान पर पधारे। संयोग से साध्वीप्रमुखाजी वहीं पर थे। जल्दबाजी में सतियों ने साध्वीप्रमुखाजी के लिए बिना साइड के सहारों वाली कुर्सी लगा दी। वे उस पर बैठने लगीं तो आचार्यश्री ने सतियों को सुविधाजनक कुर्सी लाने के लिए फरमाया। साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया–मेरा संतुलन ठीक है मैं उस पर आराम से बैठ सकती हूँ, ऐसा कहकर बैठ गईं। कुछ देर बाद आचार्यप्रवर को कुछ निवेदन करने के लिए उस कुर्सी से उठकर थोड़ा आगे पधारीं तो आचार्यप्रवर ने सतियों को इंगित कर कुर्सी बदलवा दी।

१४ सितंबर, विहार के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी वंदनार्थ आचार्यप्रवर के स्थान पर पधारे। उस दिन आचार्यप्रवर के कक्ष में टांटिये उड़ रहे थे। आचार्यप्रवर ने परिचारिका साध्वी को फरमाया–देखो, यहाँ (साध्वीप्रमुखाजी के पास) खड़ी हो जाओ, टांटिये आ रहे हैं, उन्हें उड़ाने का ध्यान रखो।

साध्वीप्रमुखा मनोनयन का ये एक संवत्सर ऐसे अनेक संस्मरणों से सराबोर है।

यह वर्ष गुरु की अनहद कृपा के अमृत आस्वादन का था।

यह वर्ष दायित्व बोध के दुर्लभ क्षणों का अमिट दस्तावेज है।

आचार्यप्रवर की पारखी नजरों से निखरा हुआ यह कोहिनूर साध्वीगण को अमिट प्रकाश प्रदान कर रहा है।

एक संवत्सर का यह सुनहरा सफर प्रेरणादीप बनकर सदा साध्वी समुदाय का मार्ग आलोकित करता रहेगा।

तेरापंथ के साध्वीप्रमुखा के महिमा मंडित पद को सुशोभित करने वाली नवम् साध्वीप्रमुखा को अंतहीन अभिवंदना।

कोटि-कोटि वंदना।

वृद्धा आश्रम में सेवा कार्य

राजाजीनगर।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस तेयुप द्वारा सेवा के अंतर्गत महालक्ष्मी लेआउट स्थित जेमजे वृद्ध आश्रम में वृद्ध व्यक्तियों के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से की गई। वृद्ध आश्रम प्रबंधक ने आश्रम से संबंधित जानकारी प्रदान की। इस सेवा कार्य हेतु स्व० उत्तमचंद भंडारी की पुण्यतिथि में धर्मपत्नी कमल बाई भंडारी के सहयोग से किया गया। वृद्ध आश्रम में ४२ वृक्ष व्यक्तियों को मिठाई बाँटी गई एवं वृद्ध आश्रम में टीवी भेंट की गई।

इस अवसर पर सेवा कार्य हेतु तेयुप, राजाजीनगर से निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता, रणित कोठारी, अभिषेक पीपाड़ा, ललित मुणोत, भावेश मूथा एवं राजेश देरासरिया की उपस्थिति रही। सेवा कार्य के संयोजक मुकेश भंडारी का विशेष श्रम रहा।

✦ *गुण ग्राहकता से आदमी का जीवन परिपूर्ण बन जाता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

अप्रतिम आत्मसाधिका साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

❐ **साध्वी सुमंगलप्रभा** ❐

तेरापंथ के भाग्यविधाता आचार्य महाश्रमण ने लगभग १ वर्ष पूर्व धर्मसंघ को नवमी साध्वीप्रमुखा का उपहार दिया। प्रथम मनोनयन दिवस के अवसर पर साध्वीप्रमुखा की अभ्यर्थना करती हूँ।

सांसारिक जीवन में व्यक्ति समृद्धि बढ़ाने के लिए हीरा, पन्ना आदि रत्नों का संचय करता है। जिसके पास एक बहुमूल्य रत्न होता है वह भी बहुत खुश हो जाता है, अमीर बन जाता है, आपके पास मैंने बहुत सारे बहुमूल्य रत्न देखे हैं, जिनकी सुरक्षा आप पूर्ण जागरूकता से कर रही हैं। उन रत्नों में तीन विशिष्ट रत्न हैं–आत्मनिष्ठा, आत्म-प्रसन्नता और आत्मकौशल।

आत्मनिष्ठा : दुनिया में दो तरह के व्यक्ति होते हैं–(१) आत्मकेंद्रित, (२) परकेन्द्रित। सामान्य स्तर पर जीने वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण परकेन्द्रित (पदार्थ केंद्रित) होता है। वे लोग पदार्थ की प्राप्ति में अपना चिंतन, क्रिया व शक्ति लगाते हैं। पदार्थ की प्राप्ति न होने पर वे विचलित हो जाते हैं, बेचैन हो जाते हैं। उनकी चेतना पदार्थ के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन जो असाधारण व्यक्ति होते हैं वे आत्मा के स्तर पर जीते हैं। आत्मकेंद्रित होते हैं, आपके आध्यात्मिक व्यक्तित्व का प्रथम रत्न है–आत्मनिष्ठा। मुझे वर्षों से आपकी निकट सेवा का सौभाग्य प्राप्त है। आपका हर कार्य चाहे उठना, बैठना, चलना, सोना व खाना-पीना आदि कोई भी प्रवृत्ति हो, प्रत्येक प्रवृत्ति में आप भीतर से जितने जागरूक हैं, उतने बाहर से भी हैं, मेरी कहीं आत्मा की चादर मैली न हो जाए, कोई दोष न लग जाए। आचार्य महाप्रज्ञ जी एक बार (बीदासर भवन) में प्रातःराश के पश्चात् टहला रहे थे। मैंने उनके चरणों के नीचे दो लुंकार बिछाए। टहलाते-टहलाते पूछा–बताओ! दोनों में क्या अंतर है? मैंने रंग आदि के आधार पर अपनी अल्पबुद्धि से उत्तर दे दिया। आचार्यप्रवर ने फिर मुस्कुराते हुए फरमाया–देखो! एक में सलवटें हैं, दूसरे में नहीं। वह राग का लुंकार है, जिसमें सलवटें हैं, दूसरा वीतराग का, जिसमें सलवटें नहीं हैं। जिसके बाहर में सलवटें हैं, उसके भीतर में तो होंगी ही। बताओ! ये किसका लुंकार है। मैंने निवेदन किया–जिसमें सलवटें नहीं हैं वो मुख्य नियोजिका का है व अन्य मेरे निश्रा का है।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने बात-बात में बोध दे दिया तथा साध्वीप्रमुखाश्री जी के साधनापरक व्यक्तित्व को परखकर मानो वीतरागता का आशीर्वाद प्रदान कर दिया।

सचमुच आपका हर कदम वीतरागता की दिशा की ओर उन्मुख है। आपकी अनन्य आत्मनिष्ठा की प्रांजल प्रणतिमय अभिवंदना।

आत्मप्रसन्नता : आपके व्यक्तित्व की आभा को शतगुणित करने वाला दूसरा रत्न है–आत्मप्रसन्नता। प्रसन्नता साधक की पहचान है। जो व्यक्ति प्रसन्नत है। वह दूसरों की अपेक्षा स्वस्थ है। व्यक्ति को इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होने पर अप्रसन्न हो जाता है। प्रसन्नता व्यक्ति व वस्तु सापेक्ष होने से खंडित हो जाती है। जो व्यक्ति निरपेक्ष होता है, वह प्रतिकूल परिस्थिति में भी प्रसन्न रहता है। विचलित नहीं होता है। उसकी प्रसन्नजा अखंड रहती है।

आपके जीवन के बारे में सुना है, देखा है, अनुभव भी किया है, किसी भी तरह की परिस्थिति में आपको उत्तेजित नहीं किया। लगता है परिस्थिति का सामना करना व उससे बाहर निकलना यह गुर आपको जन्मघुट्टी से मिला है। क्योंकि आप स्वयं अनुशासनप्रिय हैं और सकारात्मक है। आप किसी घटना व विवादास्पद प्रसंग आने पर उदास व खिन्न नहीं होते हैं। आप सदैव प्रसन्न रहते हैं। चाहे सिलीगुड़ी में अलग चतुर्मास का प्रसंग आया अथवा पुनः गुवाहाटी में गुरुकुलवास का अवसर मिला–दोनों ही वक्त आपका संतुलन व प्रसन्नता हमारे लिए प्रेरणास्पद है।

आपकी अविराम आत्मप्रसन्नता को श्रद्धासिक्त अभिवंदना।

आत्मकुशलता : आपके योगमय व्यक्तित्व को सँवारने वाला तीसरा रत्न है–आत्मकुशलता। सम्यक् पुरुषार्थ कुशलता को हासिल करने का मापदंड है। ज्ञानयोग, भक्तियोग व कर्मयोग तीनों योगों में आपके पुरुषार्थ का योग महत्त्वपूर्ण है।

आपका पुरुषार्थ आत्मपवित्रता की दिशा में गतिशील है। प्रायः ब्रह्ममुहूर्त में स्वाध्याय का क्रम शुरू होता है, वह रात्रि लगभग १०-११ बजे तक चलता है। प्रायः प्रतिदिन ब्रह्म बेला में आप 'आचारांग भाल्यम्' का चिंतन, मनन और निदिध्यासन पूर्वक साध्वियों को स्वाध्याय करवाते हैं। भाष्य सहित वाचना देते हैं। उस समय आप ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि लगता है आत्मा के आस-पास हो। हम भी उन पलों में आत्मकेंद्रित हो जाते हैं कि समय का पता ही नहीं चलता। ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप मोक्षमार्ग के चार साधन हैं। आपने चारों क्षेत्र में पुरुषार्थ का दीप प्रज्ज्वलित किया है और उसके अलौकिक आलोक से स्वयं को निरंतर आलोकित कर रहे हैं। चाहे साध्वी समाज हो या श्रावकों को संभालना और समय देना हो, इसमें आपका समय, शक्ति व श्रम आपके आत्म-कौशल को प्रदिर्शत करता है। स्व-आत्मा-कौशल को विकसित करने में योजित आपका पौरुष अभिलषणीय है। आप निश्चय और व्यवहार के संतुलन के प्रतीक हैं।

आपके आदर्श आत्मकौशल की आस्थामय अभिवंदना।

अस्तु! आत्मप्रज्ञा की आराधिका साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रथम मनोनयन दिवस पर हृदय की अनंत गहराइयों से अभिवंदना। आपके नेतृत्व में साध्वी समाज में भी आत्मनिष्ठा, आत्मप्रसन्नता और आत्मकुशलता का दरिया निर्बाध गति से लहराता रहे। आप चिरायु हों, निरामय रहें, मंगलकामना।

कनक-आभा विश्रुतविभा

❐ **साध्वी मलयश्री** ❐

हमारे इस विश्व में अनेक महत्त्वपूर्ण धातुएँ हैं, उनमें संभवतः सबसे अधिक, आकर्षक एवं उपयोग सोने (स्वर्ण) का होता है। मूल्य की दृष्टि से महँगा होने पर भी प्रायः लोगों के मन में उसके प्रति आकर्षण रहता है। खादान से निकली स्वर्ण धातु ताप आदि कितनी प्रक्रिया से गुजरने के बाद अपने आपमें अनेक स्वरूप को प्राप्त होता है। स्वर्ण धातु अपने आप में अनेक विशेषताओं को स्वयं समाविष्ट किए हुए है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में आचार्य कौटिल्य ने सोने में अनेक गुण बताए हैं, उन्होंने लिखा है–(१) एक सा रंग होना, (२) बीच में गाँठ न होना, (३) टिकाऊ होना, (४) कांतिमान, (५) मन और आँखों को अच्छा लगने वाला, (६) एक जैसी बनावट, (७) औषधीय गुणों से युक्त। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को स्वर्ण की भाँति कब, छेद, ताप, ताड़न की प्रक्रिया से गुजारा हो वह व्यक्ति भी सोने के इन गुणों से युक्त होता है। हम वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री के जीवन-पोथी को पढ़ने का प्रयत्न करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उसका हर पृष्ठ स्वर्णमयी आभा से आलोकित है। हो भी क्यों नहीं? साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी में गुरुदृष्टि, साधना, पुरुषार्थ और परिस्थिति-रूपी कब, छेद, ताप और ताड़न से अपने जीवन को सँवारा है, निखारा है। सोने के गुण हमें साध्वीप्रमुखाश्री जी में और अधिक परिष्कृत रूप में परिलक्षित होते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से इस पर विस्तार से व्याख्या का अवकाश है। मेरी सामान्य लेखनी तो संक्षेप-मार्ग का अवलंबन लेकर ही गतिमान हो रही है।

स्वर्ण का एक गुण है–एक-सा रंग होना। साध्वीप्रमुखाश्री जी की प्रत्येक गतिविधि एकमात्र साधना के शुक्ल रंग से रंगी हुई है। प्रायः ३:३० बजे ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से लेकर रात्रि में १०-११ बजे शयन तक की कालावधि में न जाने कितने-कितने कार्य वे संपादित करते हैं। उस कार्य संपादन की पृष्ठभूमि में सहज साधना का दृढ़ आधार है। चाहे जन सेवा हो या जन उद्बोधन, विहार हो या विश्राम, मौन हो या संभाषण, स्वाध्याय हो या ध्यान, पत्र लेखन हो या पत्र-पठन, प्रेरणा प्रदान कर रही हो या प्रोत्साहन का संवर्धन, निश्चय में लीनता हो या व्यवहार में तल्लीनता आदि प्रकृतियाँ एकमात्र साधना के सहज, शांत और सुरम्य राजपथ से गुजरती हैं।

स्वर्ण का दूसरा गुण है बीच में गाँठ न होना–जहाँ सारल्य का वास होता है वहाँ ग्रंथि कैसी? साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में कोई गाँठ नहीं है। उनका जीवन 'सोही उज्जुयभूयस्स' इस आगम सूक्त का यथार्थ निदर्शन है। उनके साथ किसी ने प्रतिकूल व्यवहार किया हो या अविनय संवलित शब्दों का प्रयोग, किसी ने समय पर काम किया हो या नहीं, किसी के भी प्रति उन्होंने मन में कोई गाँठ नहीं होती। वे स्वयं ग्रंथिमुक्त हैं तथा अपने सान्निध्य में आने वाले अनेक दिलों की गाँठों को खोलते हैं, खोलने में तत्पर हैं। जहाँ उलझने होती हैं, जटिलताएँ होती हैं, वहाँ गाँठ पड़ती है। साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन इतना सुलझा हुआ कि उसमें किसी भी प्रकार की कोई जटिलता नहीं है। इसलिए वहाँ कोई गाँठ नहीं है।

टिकाऊ होना सोने का गुण है, वह बहुत लंबे समय तक टिका रहता है, जल्दी से सड़न, गलन आदि अवस्थाओं को प्राप्त नहीं होता। साध्वीप्रमुखाश्री जी आज्ञा, मर्यादा में पूर्णतोभावेन स्थैर्य का धारण किए हुए है। इस विषय में उन्हें कोई विकल्प मान्य नहीं है। गुरोर्दृष्टिः व्यविचारणीया अलंघनीया गुरोराज्ञा आदि वाक्य उनके केवल आदर्श नहीं हैं, अपितु जीवनगत है। जिनकी दृष्टि आत्मसाधना, गुरुदृष्टि की आराधना और साधना पर टिकी हुई है।

मन और आँखों को अच्छा लगता है। स्वर्ण कांतिमान होता है। इसकी कांति लोगों के मन को अपनी ओर खींच लेती है। साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन भी आकर्षण का एक अनुपम केंद्र है। उनकी शुभ सन्निधि में जो भी आता है वह चाहे परिचित हो या अपरिचित, पहली बार भाया हो वह अनेक बार उनकी सहज, सौम्य मुद्रा सबके आकर्षण का विषय है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी फरमाया करते–जो तेजोलेश्या में जीता है उसके प्रति सबका आकर्षण बढ़ जाता है। साध्वीप्रमुखाश्री संभवतः तेजोलेश्या में जीती है। यही कारण है कि आबाल वृद्ध के मन में आँखों को प्रिय लगती है।

औषधीय गुणों से युक्त सोने के अनेक गुणों में यह एक महत्त्वपूर्ण गुण है। निशीथ भाष्य आदि ग्रंथों में यह वर्णन मिलता है कि जिस पानी में सोना डालकर रखा जाता है। उसमें औषधीय गुणों का समावेश हो जाता है। बिच्छू काटने के स्थान पर उस पानी को लगाने से जहर उतर जाता है। सोने से स्वर्णभस्म आदि अनेक औषधियों का निर्माण होता है। जो शरीर की कमजोरी दूर कर पौष्टिकता प्रदान करती हैं। आपश्री की सन्निधि सबके लिए एक दवा का काम करती है। प्रतिदिन न जाने कितने लोगों के अंतर्मन की पीड़ा को दूर कर अपनत्व के अमृत प्रदान कर नव संजीवन प्रदान करती है। सारणा-वारणा के स्वर्णभस्म से साध्वी समुदाय को पोषण प्रदान कराते हैं।

अष्टम् साध्वी प्रमुखाश्री शासनमाता का अभिधान भी कनकप्रभा है। श्रद्धेय शासनमाता के गुण सुमनों में भी आपका जीवन सुरभित है, सुशोभित है।

इस प्रकार कनकप्रभा से अभिमंडित साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति मंगलकामना करते हैं कि उनकी वह कनकाभा शत सहसुगुणित होती हुई संपूर्ण धर्मसंघ में संक्रांत हो चिरायुष्यता को प्राप्त कर चिरकाल तक हमारी साधना का पथ प्रशस्त करती रहे।

अक्षय तृतीया के विविध आयोजन

वर्षीतप का सौभाग्य महापुण्याई से मिलता है

नाथद्वारा

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी के वर्षीतप के पारणा का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि भगवान ऋषभ जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे। उन्होंने जैन धर्म का इस अवसर्पिणी काल में प्रवर्तन किया। वे आदिकर्ता थे।

सबसे पहले विवाह की प्रथा भगवान ऋषभ से शुरू हुई। ऋषभ के १०० पुत्र २ पुत्रियाँ यानी १०२ बच्चों का जन्म हुआ। वे सबसे पहले राजा बने, पहले मुनि, पहले भिक्षाचर, पहले जिन, पहले केवली और पहले तीर्थंकर बने। प्रभु ऋषभ का आयुष्य ८४ लाख योनी पूर्व था। १००० वर्ष तक साधना की। एक वर्ष तक यानी ४०० दिन तक भगवान को आहार नहीं मिला, क्योंकि भगवान की वाणी से बैलों के मुँह पर छींकी १२ घड़ी रही। १२ घड़ी की अंतराय से प्रभु को १२ माह तक सुपात्र दान का योग नहीं मिला। श्रेयांस प्रपोत्र के हाथों इक्षुरस से भगवान का पारणा हुआ। अहोदानं की ध्वनि पंच दिव्यों की वर्षा के साथ भगवान का पारणा हुआ। इक्षुरस से पारणा होने से तीज का दिन आखा तीज बन गया।

आपने कहा कि हजारों लोग वर्षीतप करते हैं। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने वर्षीतप की पतवार थाम कमाल कर दिखाया है। बुच्चा दुगड़ कुल पर सुयश का कलश चढ़ाया है। अपनी आत्मा को चमकाया है। माता-पिता का नाम महकाया है। दिल्ली से अनिल, राजलदेसर से कमल दुगड़ परिवार सहित आए।

नाथद्वारावासी प्रफुल्लित हैं, उन्हें वर्षीतप पारणा का सौभाग्य मिला है। साध्वी कुमुदप्रभा जी के ज्ञाति चारित्रात्माओं के संदेश आए हैं। मंगलकामना करते हैं कि कुमुदप्रभा जी त्याग के क्षेत्र में सतत गतिमान रहें। साध्वीवृंद द्वारा गीतों का संगान किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी कुमुदप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में साध्वी कुमुदप्रभा जी के संसारपक्षीय नातीलों ने भी अपनी लाड़ली के वर्षीतप पर वक्तव्य, कविता, गीत आदि के माध्यम से तपसण को बधाई दी।

तेममं, नाथद्वारा ने गीत का संगान किया और संकल्पों का गुलदस्ता भी साध्वी कुमुदप्रभा जी को भेंट किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने सॉन्ग, लघु नाटक प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में कमलेश धाकड़ ने सबका स्वागत किया।

मुख्य अतिथि निर्मल गोखरू ने कहा कि भगवान ऋषभ ने असि, मसि, कृषि का आरंभ किया और वह युग के प्रथम दृष्टा, नायक और नेता थे। वर्षीतपधारी साध्वी कुमुदप्रभा जी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन साध्वी कुमुदप्रभा जी के नातीले कमल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनम्रयशा जी ने किया। आभार ज्ञापन सभाध्यक्ष निर्मल छाजेड़ ने किया।

कोकराझाड़

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुवाहाटी से समागत श्रद्धा की प्रतिमूर्ति कमला देवी डागा तथा सुंदर बाई दुधोड़िया ने क्रमशः अठारहवें एवं सोलहवें वर्षीतप का पारणा किया तथा आगंतुक वर्ष के लिए वर्षीतप का प्रत्याख्यान किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि सभ्यता एवं संस्कृति की विकास यात्रा का नाम है—ऋषभ, कला एवं विज्ञान की नींद रखने वाले थे—ऋषभ, पुरुषार्थ चतुष्टयी के पुरोधा थे, उनका कथन था—अर्थ एवं काम संसार की अनिवार्यता है तो धर्म एवं मोक्ष मंजिल तक पहुँचाने वाले हैं।

कार्यक्रम में साध्वी स्वस्तिकाश्री जी, साध्वी सुधांशुप्रभा जी, साध्वी गौतमयशा जी ने ऋषभ पोस्ट ऑफिस कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, किशोर मंडल ने पृथक्-पृथक् रूप से ऋषभ के जीवन चरित्र को कार्यक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया। महासभा उपाध्यक्ष विजय चोपड़ा, महासभा आंचलिक प्रभारी सुशील भंसाली, स्थानीय सभाध्यक्ष सुनील आंचलिया, गुवाहाटी सभाध्यक्ष बजरंग सुराणा, अशोक डागा आदि ने वक्तव्य के द्वारा अपने विचार रखे।

स्थानीय तेममं, तेयुप, कपल्स, राजेश, गौरव लुणिया, तारा देवी सेठिया ने अपनी भावना गीतिका के माध्यम से रखी। तेयुप अध्यक्ष विजय भूरा एवं राजीव ने तपस्वियों का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारंभ स्थानीय सभा के पदाधिकारियों द्वारा मंगल संगान से हुआ। संचालन एवं आभार ज्ञापन स्थानीय सभा मंत्री कन्हैयालाल चोपड़ा द्वारा किया गया।

हिसार

शासनश्री साध्वी तिलकश्री जी के सान्निध्य में भूना शहर में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम और साथ में ही तेरापंथ भवन (प्रथम तल) शिलान्यास समारोह आयोजित हुआ। इसमें तेरापंथी महासभा ने भूना जैसे एक छोटे से शहर के उत्थान के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया जो बहुत सराहनीय है।

कार्यक्रम का प्रारंभ दीया जैन द्वारा नमस्कार मंत्र की विशेष प्रस्तुति से हुआ। कन्या मंडल और किशोर मंडल ने भगवान ऋषभ पर भावपूर्ण कव्वाली और ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा एक रोचक नाटिका की प्रस्तुति हुई। साध्वीवृंद ने भगवान आदिनाथ और इतिहास के बोलते पृष्ठ एकांकी द्वारा प्रस्तुति दी और सुमधुर गीतिका का गायन किया। साध्वी निर्णयप्रभाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शासनश्री साध्वी तिलकश्री जी ने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि आज हमारी समाज व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, राज व्यवस्था, संस्कृति और सभ्यता भगवान ऋषभ की अमूल्य धरोहर है।

साध्वीश्री जी की प्रेरणा से बहन संतोष, अनु और छवि का एकासन वर्षीतप सानंद संपन्न हुआ और तप का अभिनंदन तप द्वारा हुआ, जिसमें बहन अनीता ने एकासन की अठाई की और विनय जैन तथा नीतू जैन (चीका मंडी) ने जोड़े से एकासन वर्षीतप का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में नोएडा, दिल्ली, जीन्द, नरवाना, उकलाना, टोहाना, धारसूल, रतिया, चीका मंडी और भूना आदि अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुगण ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। जिनेंद्र, मुदित, योगेश, रजत, दीपक, कुसुम, हेमलता, सरला, छवि, तेरापंथ महिला मंडल भुना, तेरापंथ महिला मंडल रतिया आदि ने भगवान के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन अनिल जैन ने किया।

मोक्ष की साधना के लिए त्याग...

(पृष्ठ १५ का शेष)

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि इस अध्रुव संसार में दुःख बहुत हैं। जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु दुःख है। संसार में दुःख हैं, दुःख के हेतु हैं और दुःख निवारण के हेतु भी हैं। इच्छाओं से व्यक्ति दुखी हो सकता है। इच्छाओं का अंत हो जाने से दुःख का अंत-निर्वाण हो सकता है। बारह व्रतों को समझकर अपने जीवन में अंगीकार करने से इच्छाएँ सीमित हो सकती हैं।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी की सहवर्ती साध्वियों ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल द्वारा गीत एवं नवतत्त्व पर सुंदर प्रस्तुति हुई। कन्याओं ने संकल्पों का रजोहरण पूज्यप्रवर को समर्पित किया। पूज्यप्रवर ने निरवद्य संकल्प स्वीकार करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के विविध आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

भगवान महावीर जन्म जयंती के अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, रोहिणी के तत्त्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रोहिणी क्षेत्र के विधायक महेंद्र गोयल, अग्र भागवत प्रणेता श्री रामगोपाल बेदिल, तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, मंत्री संजीव जैन, रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन आदि गणमान्य जन उपस्थित थे।

विधायक महेंद्र गोयल ने कहा कि भगवान महावीर की जन्म जयंती हम सबके लिए वरदान बने, अपेक्षा है। मुख्य वक्ता रामगोपाल बेदिल ने कहा कि भगवान महावीर के सकारात्मक अवदानों में वह बल है कि जीवन की दशा और दिशा तो बदलती ही है।

तेरापंथ सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि महावीर का जीवन दर्शन जैन धर्म का प्राणतत्त्व है। तेरापंथी सभा, दिल्ली उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन ने कहा कि आज देश विषम दौर से गुजर रहा है। चारों तरफ विषमताओं के काले बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे वातावरण को समरसता प्रदान करने वाले महावीर द्वारा प्रदत्त अवदान हमाने लिए संबल हैं। तेरापंथी सभा अध्यक्ष विजय जैन ने अपना वक्तव्य दिया।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि महावीर का जन्म उन्नत विचारों का जन्म है। सद्संस्कारों का जन्म है। नई आशा का जन्म है। महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर हैं, जिन्होंने अपने आत्मबल एवं भीतर छिपी शक्तियों से स्वयं का मार्ग स्वयं प्रशस्त किया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि महावीर की करुणा ने दास प्रथा का अंत किया। जाति-पांति-रंग-लिंग के आधार पर कोई मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं हो सकता, बल्कि अपने आचरण से मनुष्य महान बन सकता है।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि महावीर की अहिंसा ने प्राणीमात्र में चेतना की स्वीकृति देकर, हर प्राणी को जीने का अधिकार है। यह सांसारिक विषमता केवल अपने द्वारा कृत धर्मों की है।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने अपने विचारों को सुमधुर गीतिका के द्वारा प्रस्तुति दी। भिक्षु भजन, मंडल, रोहिणी युवती बहनों द्वारा सामूहिक गीतों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर विधायक रिठाला महेंद्र गोयल ने रोहिणी सेक्टर-५ की मैंन सड़क को 'आचार्य महाश्रमण मार्ग' की उद्घोषणा की तथा तेरापंथ भवन के सामने डीडीए के द्वारा निर्मित उद्यान को भी 'आचार्य महाश्रमण उद्यान' नामकरण करने की उद्घोषणा कर कार्यक्रम को जीवंत कर दिया।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेममं की बहनों द्वारा किया गया तथा संचालन पराग जैन, तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष द्वारा किया गया। आभार व्यक्त किया सभा के उपाध्यक्ष उत्तम छाजेड़ ने। इस अवसर पर रोहिणी सभा द्वारा आगंतुक अतिथियों को मोमेंटो एवं पुस्तक भेंट की गई।

फरीदाबाद

साध्वी अणिमाश्री जी एवं मंदिरमार्गी समाज से साध्वी चंदनबाला जी के सान्निध्य में अतमानंद जैन सभा, श्री जैन स्थानकवासी सभा एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आत्मबल्लभ जैन भवन में महावीर जयंती का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के परिवहन मंत्री मूलचंद शर्मा, बड्खल विधानसभा क्षेत्र से विधायिका सीमा त्रिखा, पूर्व राजनैतिक सचिव, मुख्यमंत्री हरियाणा अजय गौड़ एवं संपूर्ण जैन समाज के विशिष्ट महानुभावों एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि महावीर अतीत का गौरव है, वर्तमान की जरूरत है और भविष्य का उजाला है। महावीर के सिद्धांत अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत कालजयी है। महावीर ने स्वयं को तपाया, खपाया, साधा। साधना की आँच में निखरे तब सिद्धि ने उनका वरण किया।

साध्वी धर्मरतना जी महाराज सा ने कहा कि भगवान महावीर के जीवन से हम अनुशासन का पाठ पढ़ें। भगवान महावीर के जीवन रूपी हार से समता, विनम्रता, सरलता, शालीनता, सहजता के मोती लेकर अपने जीवन को आबदार व चमकदान बनाएँ। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

श्री आत्मवल्लभ जैन सभा के अध्यक्ष राजकुमार जैन, हरियाणा सरकार के मंत्री मूलचंद शर्मा, श्री जैन स्थानकवासी सभा, सेक्टर-७ के अध्यक्ष रवींद्र जैन, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गुलाबचंद बेद ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

तेममं की बहनों ने बच्चों के साथ दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने नाटिका प्रस्तुत की। नीलम जैन ने भाव अभिव्यक्त किए। सभी कलाकार सारिका जैन ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा सबका मन मोह लिया। अनिल जैन ने भजन की प्रस्तुति दी। अभिराज जैन ने कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। रियान जैन ने विचार एवं ललिता जैन ने नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन श्री आत्मवल्लभ जैन सभा के मंत्री विनीत जैन ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *साधक प्रमादवश चारित्र से भटक जाता है तो प्रतिक्रमण और प्रायश्चित्त के द्वारा उस प्रमाद की शुद्धि की जा सकती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

अर्हम्

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

शुभ मनोनयन दिन आया, श्रमणी परिकर मोद मनाए,
परिकर मोद मनाए, भावों का अर्घ्य चढ़ाए रे।।

जन्मधरा चंदेरी में गुरु तुलसी कर से दीक्षा,
महाप्रज्ञ मंगल सन्निधि में पाई गहरी शिक्षा,
प्रभु के अनगिन उपकार हैं,
बरसी अमत रसधार है,
दो गुरुओं का निर्देशन जीवन शतदल विकसाए रे।।

ज्योतिचरण जय महाश्रमण पौरुष के परम पुजारी,
कीर्तिमान पर कीर्तिमान रचते हैं कीरतधारी,
वैशाख महीना साख है,
रचता नूतन इतिहास है,
चंदेरी से तृतीया साध्वीप्रमुखा खोज कर लाए रे।।

मन वचन कर्म त्रियोग साधना से सिंचित फुलवारी,
तप, जप, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय बने अविरल सहचारी,
संयम से अनुबंधित चर्या,
आराधित वर माता ईर्या,
पंचाचार साधिका तेरी गौरव गाथा गाएँ रे।।

शासनमाता सी वत्सलता देखें बाहर भीतर,
सारण-वारण की शैली में रहे न कोई अंतर,
गण गणपति से ही प्रीत है,
गुरु आज्ञा ही संगीत है,
श्रद्धा सेवा और समर्पण विनय भाव दरसाए रे।।

श्रुताराधिका सतियों की लंबी कतार बन जाए,
संस्कृत भाषा के विकास की नई पौध सरसाए,
ये स्वप्न आपके वरदायी,
गुरु आशीर्वर से फलदायी,
अग्रिम चयन दिवस पर हम संस्कृत में गीत बनाएँ रे।।
युगों-युगों तक मिले शासना मंगल भाव सजाएँ रे।।

लय : स्वामीजी थारी साधना री मेरू सी---

अर्हम्

● **साध्वी मनीषाप्रभा** ●

तेरापंथ की नवमी साध्वीप्रमुखाजी की महिमा अपरंपार।
अध्यात्म की महालक्ष्मी के चरण कमल में वंदन बारंबार।।

अध्यात्म के नवप्रभात की बाज रही मंगल शहनाई।
ज्योतिपुंज के ज्योतिचरण की तुम अद्भुत अरुणाई।
शुभकामना शुभभावना की बढ़ती रहे तब तरुणाई।
संयम की दीपशिखा का हम करते पग-पग जयकार।।१।।

श्री महाप्रज्ञ वाङ्मय का संपादन कर रच दिया नव इतिहास।
गुरु की खरी कसौटी पर निखरा एक अक्षय विश्वास।
श्री तुलसी महाप्रज्ञ महाश्रमण गुरु का मिला दिव्यतम प्रकाश।
हर पल हर घड़ी तुमसे जुड़ता रहे मंगलमय संसार।।२।।

कोहिनूर हीरे के कुशलपारखी को लखदाद है।
सूरत की पुण्यधरा पर बजा रहे श्वेत शंखनाद।
तेजस्वी आभामंडल में एक ही मंगल फरियाद।
रिद्धि सिद्धि सारी निधियाँ मिलकर बजा रही झंकार।।३।।

अर्हम्

● **साध्वी सुषमाकुमारी** ●

मनोनयन की स्वर्णिम बेला खुशियों में भीगे जलजात।
पुलक रहा मन पंछी मेरा वर्धापित करने दिन-रात।
दूर भले मैं तन से हूँ पर मन से नहीं जरा भी दूर।
भावों की मुक्ता मणियों को स्वीकारो जो है अवदान।।

आर्यप्रवर तुलसी के मुख से संयम का वरदान मिला।
महाप्रज्ञ की चरण शरण में जीवन का मधुमास खिला।
अप्रमाद भी राह पकड़ कर लिखो विकास के नूतन सूत्र।
रहो निरामय बनो चिरायु हर पल हर दिन हो उजला।।

गुण दरिये में अवगाहू? मुझमें वह सामर्थ्य नहीं है।
अलंकार से करूँ अलंकृत मुझमें वह पांडित्य नहीं है।
भावों का उपहार समर्पित किस भाषा में आज करूँ मैं।
गूँथ सकूँ ग्रंथों में जीवन शब्दों में लालित्य नहीं है।।

अर्हम्

● **साध्वी काम्यप्रभा** ●

मंगल उत्सव आया, खुशियाँ मनाएँ,
सतीशेखरे! तुम्हें बधाएँ।
मन की वीणा मधुरिम तान सुनाए,
चयन दिवस मनभाए।
अमृत वर्षा करवाते हैं, प्रभुवर करुणासागर।
श्रमणी गण गुलजार बना साध्वीप्रमुखा को पाकर।।

उदित हुआ अम्बर में अरुणिम ओजस्वी दिनकर,
दिव्य अलौकिक छटा बिखेरे शीतल निर्मल शशधर,
वर्धापन का पावन अवसर, मुखरित होता अक्षर अक्षर,
हार्दिक भाव समर्पित करता मन का कोना-कोना।
दीक्षा दिन पर दिखलाया गुरुवर ने दृश्य सलोना।।

आकर्षक व्यक्तित्व तुम्हारा अप्रमत्तता अविरल,
सुधापान स्वाध्याय सदा श्रमसरिता बहती कल-कल,
नई पौध में संस्कारों का करते अभिनव सिंचन,
प्रेरक प्रोत्साहन पाकर सुरभित हो संयम उपवन,
जागृत करते सोई क्षमता, अनुशासन में है वत्सलता,

करे कामना युगों-युगों तक सन्निधि तेरी पाए।
तेजस्वी संन्यास बने शिखरों को छूते जाए।।

लय : कितना प्यारा तुझे रब ने---

जलती चिराग का वर्धापन

● **शासनश्री साध्वी संघमित्रा** ●

साध्वी प्रमुखा पद प्रवर,
मनोनयन दिन आज।
आया नई बहार ले,
खुशियाँ बे अंदाज।।

शुक्लपक्ष बैशाख का,
चतुर्दशी दिन खास।
निज दीक्षोत्सव पर रचा
विभु ने नव इतिहास।।

दीक्षा दिवस पचासवाँ,
प्रभुवर का यह साल।
ऐसी हो आयोजना,
जग में बने मिशाल।।

प्रगति शिखर चढ़ते रहो,
गण गुलशन गुलजार।
झेलो विपुल बधाइयाँ,
'संघमित्रा' उद्गार।।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा उत्तर कोलकाता रनर्स एवं श्रीश्री गवरजा माता अंचल के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर श्रीभूमि स्पोर्टिंग क्लब मैदान में किया गया। जिसमें कुल ४० यूनिट रक्त एकत्र हुआ।

परिषद के अध्यक्ष राजीव खटेड़, उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, मंत्री हेमंत बैद, एमबीडीडी के सह-संयोजक विकास गंग, हर्ष सिरोहिया, रोहित बोथरा, नवीन दुगड़ ने शिविर में अपनी सेवाएँ दी। इस शिविर में विशेष उपस्थिति रही राज्य के अग्नि शमन मंत्री सुजीत बोस की। परिषद ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जीवन ज्ञान और साधना से संपन्न था

आकोला।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तेरापंथ के दसवें आचार्य के रूप में तेरापंथ शासन को अपनी सेवाएँ दी। जैन आगमों के संपादन के माध्यम से उन्होंने जैन शासन की सेवा की। अहिंसा यात्रा, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के माध्यम से उन्होंने मानव जाति की सेवा की। उक्त विचार तेरापंथ भवन में साध्वी परमप्रभा जी ने व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मात्र १० वर्ष की अवस्था में दीक्षित होकर आचार्य तुलसी की पाठशाला में शिक्षित होकर आप एक अध्यात्म सिद्ध संत उच्च कोटि के दार्शनिक प्रबुद्ध चिंतक, मनीषी, साहित्यकार और अहिंसा के पथ के महापथिक बने।

तेरापंथ भवन में आयोजित इस महाप्रयाण दिवस के कार्यक्रम का मंगलाचरण बंसीलाल मेहता ने गीतिका के माध्यम से किया। साध्वी श्रेयसप्रभा जी ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी विनीतप्रभा जी ने कार्यक्रम के दौरान महाप्रज्ञ जी के जीवन के संस्मरणों से धर्मसभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी प्रेक्षाप्रभा जी ने गीतों के माध्यम से गुरुदेव के जीवन का चित्रण किया।

धर्मसभा में महिला मंडल अध्यक्ष संगीता चपलोत, मंत्री आशा मेहता, ज्ञानशाला संयोजिका पूजा चपलोत, सीमा चपलोत, संजय मेहता, अभिरुचि चपलोत एवं स्थानीय पूरे महिला मंडल ने गीतों के माध्यम से गुरुदेव को काव्यांजलि अर्पित की। तेरापंथ सभा के मंत्री नरेंद्र चपलोत ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान वर्ष-भर में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पारितोषिक प्रदान किए। पारितोषिक पूरनमल चपलोत की ओर से प्रदान किए गए। स्थानीय प्रशिक्षिका संगीता एवं पूजा चपलोत जिन्होंने प्रशिक्षिका का पूरा प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है, उन्होंने महासभा द्वारा भेजे गए प्रशस्ति-पत्र एवं मोमेंटो से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन रेखा चपलोत ने किया।

गृहस्थ जीवन में भी त्याग का महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, वेसु-सूरत, २७ अप्रैल, २०२३

प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि त्याग अपने आपमें एक बल होता है। जो आदमी अपनी कामनाओं का परित्याग कर देता है, इच्छा-लालसाओं का परिसीमन कर लेता है, वह अध्यात्म की दृष्टि से एक आगे बढ़ा हुआ व्यक्ति हो सकता है। त्याग बाहर से ही नहीं भीतर से भी होना चाहिए।

अगर भीतर से आसक्ति का तार जुड़ा रहता है तो त्याग में कमी है। साधु के तो आभ्यंतर और बाह्य त्याग दोनों होते हैं। वेष का भी महत्त्व है। वेष से पहचान होती है। मुख-वस्त्रिका बाँधने की सैकड़ों वर्षों की परंपरा है। सामायिक में गृहस्थ भी साधु जैसा बन जाता है। आगम, स्वाध्याय करते समय हमारा थूक न उछले इस कारण भी मुख-वस्तिका लगाई जाती है। मुख-वस्त्रिका से यह प्रेरणा भी मिलती है कि वाणी का संयम रखना है।

एक काल्पनिक प्रसंग द्वारा समझाया कि साधु के वेष का कितना महत्त्व है। साधु तो अहिंसा, दया, क्षमा और त्यागमूर्ति होते हैं। साधु को तो समता रखनी चाहिए। सामान्यतया बाहर का त्याग भी भीतर के त्याग को पोषण देने वाला बन सकता है।

त्याग के चार अंग हो जाते हैं–(१) बाहर से त्याग है, भीतर से त्याग नहीं, (२) भीतर से त्याग है, बाहर से त्याग नहीं, (३) बाहर से भी त्याग और भीतर से भी त्याग, (४) न बाहर से त्याग और न भीतर से त्याग। संस्कार निर्माण शिविर चल रहा है। बच्चों में भी त्याग की चेतना जगे। मोबाइल में ज्यादा समय न बैठे रहें। मोबाइल का नशा न हो जाए।

गृहस्थ जीवन में भी त्याग का महत्त्व है। अनावश्यक किसी पदार्थ का उपयोग न हो। दिखावा न हो, जीवन में सादगी-संयम रहे। तो हमारी आत्मा अच्छी रह सकती है।

मुनि अर्हत कुमार जी का सिंघाड़ा आज पहुँचा है। ये भी खूब अच्छा काम करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि बच्चों में संस्कार निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिका माँ की होती है। प्रारंभ से ही माँ अच्छे संस्कार देने का प्रयास करे। माँ यदि जागरूक है, तो अपने बच्चे को अच्छा बना सकती है। अभिभावक या माता-पिता बच्चों को समय दें। उनके साथ अच्छी-अच्छी बातें करें। नैतिक-धार्मिक मूल्यों की कहानियाँ सुनाएँ तो उनमें आकर्षण पैदा होगा। बच्चे अच्छे मार्ग पर चलेंगे। संस्कार देने में गुरु की भी अहम् भूमिका होती है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमारा जीवन सुंदर हो और उसकी उपयोगिता हो इसके लिए हमें इंद्रिय-संयम की बाड़ लगानी चाहिए। जो सब इंद्रियों से सुसमाहित होता है, वह व्यक्ति अपनी आत्मा को सुरक्षित रख सकता है। असंयम व्यक्ति को पाप करने के लिए प्रवृत्त करता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि मोहजीत कुमारजी, मुनि अर्हत कुमार जी, मुनि जयदीपकुमार जी, सूरत की ओर से मुनि अनंत कुमार जी, मुनि निकुंज कुमार जी, साध्वी चैतन्ययशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

इस अवसर पर उपस्थित सूरत के पुलिस आयुक्त अजय तोमर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उपासक श्रेणी-सूरत द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। त्रिकमनगर ज्ञानशाला की प्रस्तुति भी हुई। ज्ञानार्थियों ने 'प्राणी कर्म समो नहीं कोई' गीत की प्रस्तुति दी। प्रेक्षा परिवार द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। टीपीएफ द्वारा IT Guruji बैनर का अनावरण पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में हुआ।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मोक्ष की साधना के लिए त्याग व संयम जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, वेसु-सूरत, २६ अप्रैल, २०२३

तेरापंथ के राजेंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चतुर्दशी के दिन हमारे यहाँ मर्यादाओं का वाचन यथा-संभवतया चलता है। हाजरी में एक बात आती है–त्याग धर्म, भोग अधर्म। तेरापंथ के दर्शन-सिद्धांत की यह बात है। त्याग धर्म होता है, असंयमपूर्वक भोग अधर्म होता है।

जीवन में पदार्थों का उपयोग भी करना होता है। भोग शरीर के लिए पोषक भी होता है और दोषकारक भी बन सकता है। जबकि त्याग सामान्यतया आत्मा के लिए हितकर होता है। आदमी जीवन में त्याग करे। वाणी का संयम करे। मौन उन्नयन की ओर ले जाने वाला होता है। मौखर्य अच्छा नहीं होता है। खाने में भी संयम हो।

यहाँ शिविरार्थी बैठे हैं। इस बात का ध्यान रखें कि बोलना भी अच्छा होता है, तो मौन रहना भी अच्छा होता है। कम बोलने से कई झंझट टल जाते हैं। जीवन में कलह न करें, शांति रखें। यह एक प्रसंग द्वारा समझाया कि वाणी में मिठास हो। त्याग-संयम जीवन में बढ़ता रहे। छोटे-छोटे त्याग गृहस्थ करते रहें। जीवन में सादगी हो।

अणुव्रत से जीवन में सादगी व धर्म आ सकता है। जैन-अजैन कोई भी अणुव्रत का पालन कर सकता है। हमारे जीवन में सम्यक्त्व रहे। आचार्य-उपाध्याय तो तीसरे जन्म में मोक्ष ही चले जाते हैं। साधु के जीवन में सम्यक् आराधना हो तो वे १५वें भव में मोक्ष जा सकते हैं। जितना त्याग अच्छा होगा, जितनी साधना होगी, उतना ही कषाय कम होगा। मोक्ष की साधना हो सकती है। हमारी कषायमंदता बढ़े।

संस्कार निर्माण शिविर के जो बच्चे हैं, उनका अच्छा जीवन निर्माण होता रहे। पूज्यप्रवर ने कन्या मंडल की प्रस्तुति पर आशीर्वचन फरमाया एवं नया ज्ञान सीखने की प्रेरणा दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जीवन जब तक सिद्धत्व को प्राप्त नहीं कर लेता, चारों गतियों का परिभ्रमण चलता रहता है। उसका आधार उसकी भावधारा है। भाव सकारात्मक व नकारात्मक होते हैं। नकारात्मक भाव अशुभ योग की दिशा में व सकारात्मक भाव शुभ योग की दिशा में ले जाने वाला होता है। जैसी भावधारा-लेश्या में मृत्यु होती है, उसी के अनुसार उसकी आगे की गति होती है। हम निरंतर जागृत रहें ताकि हमारा वर्तमान जीवन अच्छा रहे।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आध्यात्मिकता के पोषण में हो भौतिकता...

(पृष्ठ १६ का शेष)

संस्कार निर्माण शिविर भी लगा है। ये भी समाज के धर्म से जुड़े हुए अच्छे उपक्रम हैं। प्रशिक्षिकाएँ भी अच्छा कार्य कर रही हैं। एक स्कूल-सा माहौल हो गया है। ज्ञानशाला समय के साथ-साथ अच्छा विकास करती रहें। आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी स्वामी अपने चिंतन से इसमें और विकास कराते रहें। ज्ञानशालाओं का भी संख्या व शक्ति संवर्धन हो। ज्ञानार्थियों की भी संख्या बढ़े।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि वर्तमान में सोशल मीडिया से लोगों का संपर्क और ज्ञान बढ़ रहा है, पर इसका उपयोग एक सीमा तक ही हो। इसके दुरुपयोग से व्यक्ति इमोशनली प्रभावित हो रहा है, बच्चे डिप्रेशन में जा रहे हैं। पारिवारिक संबंध टूट रहे हैं। कई तरह की बीमारियाँ होने से आदमी का आत्म-विश्वास कम होता जा रहा है। बच्चे गुस्सैल बन रहे हैं। ईगो बढ़ रहा है। इसलिए इसके दुरुपयोग से बचें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दुनिया में शक्ति का बड़ा महत्त्व है। शक्ति के बिना न ज्ञान हो सकता है, न साधना हो सकती है और न ही कष्ट सहने की क्षमता रहती है। शक्ति जागरण व संवर्धन के आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने पाँच उपाय बताए हैं–दीर्घ श्वास प्रेक्षा, क्रोध पर नियंत्रण, वाणी संयम, आहार संयम व कायोत्सर्ग। आचार्यप्रवर अनंत शक्ति जागरण का प्रयास कर रहे हैं।

ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी ने समझाया कि जो मेरे लिए श्रेयस्कर है, उसका मैं अनुसरण करूँ।

ग्रांड ज्ञानशाला कार्निवल के प्रारंभ में ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण किया गया। महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने ज्ञानशाला व संस्कार निर्माण शिविर के बारे में जानकारी दी। ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा एवं आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल ने अपनी-अपनी भावना अभिव्यक्त की। महासभा अध्यक्ष व ज्ञानशाला परिवार ने शिशु संस्कार बोध-भाग-३ का नवीन संस्करण पूज्यप्रवर को उपहृत किया।

ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति में गुरु वंदना, ज्ञानशाला गीत, आसन, महाप्राण ध्वनि, ध्यान, संस्कार सप्तक, २५ बोल के कुछ बोल एक्शन के साथ, महाश्रमण अष्टकम् का एक पद, वंदना सूत्र, 'श्रेष्ठ बालक कौन' गीत की कव्वाली, पाँच संकल्प, त्रिपदी वंदना एवं उद्घोष का सुंदर एकरूपता के साथ प्रस्तुति हुई। ज्ञानार्थियों ने संकल्पों का गुलदस्ता पूज्यप्रवर को समर्पित किया और पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

संस्कार निर्माण शिविर में श्रेष्ठ बालक-बालिका एवं अनुशासित बालक-बालिका के चयन का नामोल्लेख किया गया। तेयुप भजन मंडली ने गीत की प्रस्तुति दी। लिंबायत विधायिका गीता बेन पाटिल एवं आईपीएस सागर बाफना ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा दोनों का प्रतीक चिह्न से सम्मान किया गया।

संस्कार निर्माण शिविर के समापन में आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि जीतेंद्र कुमार जी ने शिविर संबंधी जानकारी दी। शिविरार्थियों ने तत्त्वज्ञान गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। शिविरार्थी जो श्रेष्ठ व अनुशासित थे, उनको सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दुर्लभ मानव जीवन को स्वार्थी नहीं परमार्थी...

(पृष्ठ १६ का शेष)

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा शासनमाता ने आदमी की दो विशेषताएँ महाश्रमण अष्टकम् में बताई हैं–पवित्र और तेजस्वी आभामंडल से युक्त। जिसकी आत्मा निर्मल होती है, उसका आभामंडल पवित्र होता है। आचार्यप्रवर की उत्कृष्ट साधना का कारण है–उत्कृष्ट अप्रमत्तता। लगता है कि जागरूकता के संस्कार आपको पूर्व जन्म से प्राप्त हुए हैं।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में मुनिवृंद द्वारा समूह गीत 'खम्मा बोलो ने मारे लाल ने' के सुमधुर संगान से की। मुनि राजकुमारजी, मुनि कोमलकुमार जी, मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि गौरव कुमार जी, मुनि अनेकांत कुमार जी, मुनि विनम्र कुमार जी, मुनि वर्धमान जी, मुनि अनुशासन कुमार जी, मुनि प्रिंसकुमार जी, मुनि नम्रकुमार जी, मुनि केशीकुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी, मुनि रम्यकुमारजी, मुनि ऋषि कुमार जी, मुनि चिन्मय कुमार जी, मुनि मेधार्य कुमार जी, मुनि देवकुमार जी ने भी अपनी भावना पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अभिव्यक्त की।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी, साध्वी हिमश्री जी, साध्वी संगीतप्रभा जी, साध्वी पावनप्रभाजी, साध्वी आरोग्यश्री जी, साध्वी चारित्रयशा जी, साध्वी तन्मयप्रभा जी, साध्वी ख्यातियशा जी, साध्वी रश्मिप्रभा जी, साध्वी चेतनप्रभाजी, साध्वी चैतन्ययशाजी, साध्वी ऋषिप्रभा जी, साध्वी अखिलयशा जी, साध्वी मंजुलयशा जी, साध्वी मलययशा जी, साध्वी स्तुतिप्रभाजी, साध्वी अक्षयप्रभा जी, समणी अक्षयप्रज्ञा जी, समणी निर्मलप्रज्ञा जी आदि ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में सांसारिक दुगड़ परिवार ने गीत की प्रस्तुति दी। सूरज करण, श्रीचंद दुगड़, चिन्मय, खुशबू, प्रेक्षा, आज्ञा बच्छावत, रतनी देवी बोथरा ने भी अपनी भावना रखी। ज्ञानशाला की विविध राज्यों की वेशभूषा व बोली में सुंदर प्रस्तुति हुई। उपासिका मंजु दुगड़ ने ३५ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। सन् २०२४ का जन्मोत्सव-पट्टोत्सव के कार्यक्रम जालना में होने की संभावना है। सुनील सेठिया ने उस कार्यक्रम के बैनर का पूज्यप्रवर की सन्निधि में अनावरण किया। सूरत समाज द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
8 - 14 मई, 2023

✦ *व्यक्ति को पापार्जन से बचने और मोहकर्म को प्रतनु करने का प्रयत्न करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

श्रद्धा व भक्तिभाव से मना युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण का 62वाँ जन्मोत्सव

दुर्लभ मानव जीवन को स्वार्थी नहीं परमार्थी बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

वेसू-सूरत, २९ अप्रैल, २०२३

आज ही के दिन लगभग ६१ वर्ष पूर्व सरदारशहर के झुमरमलजी दुगड़ के परिवार में रत्नाधिक माँ नेमांजी की कुक्षि से एक बालक का जन्म हुआ था। नाम रखा गया मोहन। लगभग १२ वर्ष की अल्पायु में बालक मोहन ने संयम स्वीकार किया और उत्तरोत्तर सेवा, विनय भावना एवं संघनिष्ठा से मुनि मोहन गणाधिपति गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की नजरों में समाहित हो गए। तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता बन गए।

तेरापंथ के महासूर्य, जन-जन की आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस सूरत की धरा पर मनाया गया। प्रातः ४ बजे से ही श्रावक-श्राविका समाज अपने आराध्य का अभिवादन करने के लिए उपस्थित होना शुरू हो गया। परम पावन लगभग ४:११ बजे महावीर समवसरण में पधार तो हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने अपने गणमान्य को वर्धापित करते हुए जन्म दिवस की मंगल शुभकामनाएँ प्रकट की।

युगप्रधान के जन्मोत्सव की अभ्यर्थना कराते हुए मुख्य मुनिश्री ने मंगल गीत 'भिक्षु गण के भाग्य विधाता, जिन प्रतिनिधि त्रिभुवन त्राता, वर्धमान करता गण संसार है। हो गुरुवर मुख-मुख पर तेरी जय-जयकार है' का सुमधुर संगान किया। संस्कारकों ने जन्म संस्कार करते हुए मंत्रोच्चार किया। पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में ज्ञानार्थी, महासभाध्यक्ष मनसुख सेठिया, अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, अभातेमम अध्यक्षा नीलम सेठिया, टीपीएफ अध्यक्ष

पंकज ओस्तवाल, आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, अभातेमम ट्रस्टी कनक बरमेचा, महामंत्री मधु देरासरिया, उपासक अर्जुन मेड़तवाल, महासभा संगठन मंत्री प्रकाश डागलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

सूर्योदय के समय पारिवारिकजनों ने मंगल थाली बजाकर बधाई गीत का सुमधुर संगान किया। पूज्यप्रवर ने पारिवारिकजनों को स्टेज पर बुलाकर निकट से सेवा करवाई। सांसारिक पारिवारिक जनों का परिचय भी करवाया।

साध्वीवृंद एवं समणीवृंद ने समूह गीत से पूज्यप्रवर के जन्मदिवस की अभ्यर्थना की।

मानवता के मसीहा, तेरापंथ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने जन्म दिवस पर पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है। ये मानव जीवन दुर्लभ कहा गया है। दुर्लभ होने के साथ-साथ यह बहुत महत्त्वपूर्ण भी होता है। अनंत-अनंत जन्मों तक कई जीवों को मानव जन्म प्राप्त नहीं होता है। महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि मानव जीवन ही ऐसा जीवन है, जहाँ से आत्मा परमात्मा पद को प्राप्त कर सकती है।

इस दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण जीवन को कैसे और क्यों जीएँ, जीवन का लक्ष्य क्या है? मनुष्य में चिंतन शक्ति होती है। जीवन का प्रबंधन कैसा हो? शास्त्र में बताया गया है कि जीवन से हमें लाभ क्या होगा? सबसे अच्छा लाभ है कि मोक्ष से नैकट्य हो जाए या मोक्ष की प्राप्ति हो जाए। पूर्व बंधे कर्मों को क्षीण करने के लिए इस देह को धारण करें। संयम और तप से अपने आपको भावित करते हुए जीवन जीएँ।

जन्म तो हर संसारी प्राणी का होता है। जीवन पुरुषार्थ से जीएँ। जो आदमी संयम और परोपकार का जीवन जीता है, वह एक अच्छा जीवन जीने वाला होता है। स्वार्थी न बनें, आध्यात्मिक संदर्भ में परार्थी भी बनें। बच्चों को अच्छे प्रसंग दिए जाएँ। पूज्यप्रवर ने अपने बचपन के प्रसंग भी सुनाए। जीवन में ध्यान-योग से तेजस्विता आ सकती है। बाल सूर्य का दर्शन केंद्र पर ध्यान करते हुए णमो सिद्धाणं का प्रयोग करें? तेजस्विता के साथ शीतलता रहे।

शांति में रहो पर जरूरत हो तो क्रांति भी करो। विरोधों से डरें नहीं। अनुशासन भी अच्छा रहे। मुमुक्षुओं की संख्या वृद्धि पर सभी चारित्रात्माएँ ध्यान दें। मनुष्य जीवन में साधना का पथ-दीक्षा मिल जाए तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो जाती है। गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जैसे गुरु हमें मिले। हमारा यह दायित्व है कि बाल पीढ़ी पर ध्यान देकर अच्छे संस्कार देते रहें।

तेरापंथ धर्मसंघ हमारा पूरा परिवार है। ये हमारा परिवार धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित होता रहे। दुगड़ परिवार में भी धार्मिक-आध्यात्मिक विकास होता रहे। साधु-साध्वियाँ व समणियाँ भी अपने नातिलों को सेवा कराएँ तो ध्यान दें कि कौन मुमुक्षु रूप में तैयार हो सकता है। यह प्रयास चलता रहे। हम मानव जीवन का अच्छा उपयोग करें।

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी परिवार व संजय सुराणा, संजय जैन ने पूज्यप्रवर से अर्ज की कि २०२४ सूरत चातुर्मास यथासंभवतया भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में फरमाने की कृपा करें। पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर २०२४ सूरत चातुर्मास भगवान महावीर यूनिवर्सिटी परिसर में करने की घोषणा करवाई। मुनि उदित कुमार जी आदि ठाणा का चातुर्मास उधना एवं साध्वी त्रिशला कुमारी जी का चातुर्मास सिटीलाइट भवन में करने का फरमाया।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

आध्यात्मिकता के पोषण में हो भौतिकता का उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर समवसरण,
वेसु-सूरत, २८ अप्रैल, २०२३

ससीम को असीम बनाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का समापन एवं गुजरात ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा ग्रांड ज्ञानशाला कार्निवल का समायोजन हुआ, जिसमें गुजरात में लगभग १००८ ज्ञानार्थियों की सहभागिता रही।

शक्ति और शांति के पुरोधा आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि प्राणी के भीतर अनेक वृत्तियाँ होती हैं। सद्वृत्तियाँ होती हैं, तो दुर्वृत्तियाँ भी होती हैं। वीतराग में भी उपशांत मोह कषाय विद्यमान रहता है। ज्ञानावरणीय और मोहनीय कर्म कुछ क्षयोपशम सामान्य जीव मिलेगा ही मिलेगा। इस कारण सद्प्रवृत्ति हर प्राणी में प्राप्त होती है।

दुष्वृत्तियों में एक कषाय है—लोभ। यह सब दुष्वृत्तियों में सबसे बाद में जाने वाली वृत्ति है। दसवें गुणस्थान तक सूक्ष्म संपराय लोभ विद्यमान रहता है। लोभ को पाप का बाप कहा गया है। लोभ पर नियंत्रण संतोष से किया जाए। प्रतिपक्ष का अभ्यास करने से पक्ष हल्का कम हो सकता है। क्षमा से क्रोध पर, मार्दव से अहंकार पर, ऋजुता से माया पर नियंत्रण किया जा सकता है। लोभ की चेतना तो हर संसारी प्राणी में रही है।

वर्तमान में सोशल मीडिया भी एक साधन हो गया। यह आदमी की आकांक्षाओं का निमित्त बन सकता है। इसके अपने सुपरिणाम हैं तो दुष्परिणाम भी हैं। सोशल मीडिया के सुपरिणाम का लाभ उठाएँ। साधु समाज की साधना में ये सोशल मीडिया बाधक न बन जाए। इसलिए उसे अपना विवेक रखना चाहिए।

गृहस्थों के लिए भी सोशल मीडिया संयम-अहिंसा में बाधक न बने। लाभ के निमित्त से लोभ बढ़ सकता है। इच्छाओं का परिसीमन करें। पदार्थ के भोगों की सीमा हो। परिग्रह की भी सीमा हो, ऐसी संयम की साधना की जाए। असंयम से कई बार शक्ति का गोपन हो सकता है। शक्ति का संवर्धन हो, जो शक्ति है, उसकी सुरक्षा रखो, शक्ति का दुरुपयोग न हो, सदुपयोग हो। इससे शक्ति का विकास हो सकता है।

दुनिया में बहुत चीजें हैं, इनके होने पर भी संयम हो। आध्यात्मिकता के बिना आंतरिक शांति बड़ी कठिन है। भौतिकता का उपयोग करने में विवेक और संयम जरूरी है। भौतिकता भी आध्यात्मिकता को पुष्ट करने वाली हो। भौतिकता का उपयोग आध्यात्मिकता के पोषण में हो।

आज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी आए हैं। ज्ञानशाला दिवस पर भी इतनी परिषद् नहीं होती होंगी। भौतिकता की चकाचौंध में इतने बच्चों का उपस्थित होना भी विशेष बात है। इस बात के पीछे परिश्रम लगता है। भौतिकता के सामने आध्यात्मिकता को खड़ा करना एक बड़ी बात है। स्कूल की पढ़ाई के साथ धर्म की पढ़ाई करना बहुत बड़ी बात है। तेरापंथी महासभा का यह एक अच्छा उपक्रम है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**